



II-94



II-94

धर्मरत्न वज्राचार्य गुरु श्री महाविहार

[illegible][illegible]

कञ्चुक्षिन्नाऽदिव कामसूत्रसिद्धिः ॥ सर्वकलविदो न ह्यनिष्ठपेव नित्याकलाऽ॥
 मानेनाननित्या नार्यऽसर्वमुदहसिद्धिः ॥ तासां महिमा र्थाय यथाकाञ्चसिद्धि
 ताऽ॥ अथ राधावान् कृष्णश्च लोकाऽनन राधावती चैव वजीरस्यि तासमातिष्ठामः २
 नुयतं सऽ॥ देवि देवि सदा यम् उदसीयति इह लोके साया न्मा यतऽपि विषे सर्वः
 वदं सऽराशिरीऽ॥ वद वदं सदा रा नै रा नु या ज्ञ वदं यदी नाम्ना येव लोका यतः

सत्ता नामां तु सिद्धयऽ॥ अथ काष्ठमिदं नै नु म दृष्टे मधु ले म हि ॥ तान्ता मधु लय विः
 ष्ण रा नु या ज्ञ नु दहाय ग् ॥ मधु यत्र धु लामस्य एविष्यऽसमादिताऽ॥ वृद्धाः
 यत्तपया ल्य वृ रा स्य रा नु दहाय ग् ॥ वृद्धा रा कऽकृ पा ल्य म नु या नय या
 यनऽ॥ रा कऽवृ वृ द्या निरी रा स्य रा नु दहाय ग् ॥ नव वृद्धा रुचऽकक्षि यो
 वा लो रा वि उक्तिताऽ॥ वदु स्य मधु ला दृष्ट दहाय ह नु मरु म न् ॥ स म हा वऽ

धिनिष्ठसु विष्णुमयमलीकृतशाचक्षमासाहसकयतासु मयइवहविष्णुः
 गि॥ यमइगैसुतागुसाः काजपाधवधाकृताः न प्रकैनीयगैपाणी यदिवद्विउ
 पियत्रिगः॥ यदिकर्मक्रयाद्दृश्ये शुक्लचलमवतुजा मानुषीपाण्यगैरुतः २
 गयवजसहिचगान्॥ गतादिदेवायर्ह्यु विषलाकैषइहरी॥ अणुरीदेवाय
 यापिसापिठाकृत्तुधागति॥ मयपाकृतावर्ह्यु यदिवृद्धसमापिदि शुद्धाः

दानाधवाधिष्णुः॥ धर्तृजिह्वासनायच॥ शिचगैमर्दिवजस वृष्टिकात्मसै
 हाय॥ गथासगत्तया देवि राषितश्चवजाननं॥ गतुल्लेकहविजसिन्
 गुफश्चुपाध॥ ॥ वृत्तिगोक्तुवीजाश्चवधुमहायाधवागत्तु गय
 चगाजघाघटलक्ष्यथम॥ ॥ अथराधावतिदृष्टवजीरुवावेनचधुमहाः
 याधवाधमन्तमालिष्ठमह॥ मधुलस्यकियलानवर्हनीयश्चकमदि लि

शिवत वाचतथा वाच सध्वकि बुद्धिमयता ॥ ॥ अथ राधावाभाह ॥ ॥
मधुलस्य रावसा नी ॥ एक हसैदिहसुके ॥ गि हसैव गच्छ ॥ यवमानवा धर्के
यस्य गमेच व ॥ न नानावर्धक गनय ॥ वरुपसेवतु दाप ॥ वरुसा उद्यत वि ॥
हा लानवाधमनेव ॥ दापनस्य एकल्ययता ॥ दापमानननियेह ॥ तदद ॥
नकपालके ॥ पत्रवापि रथावदी ॥ दापाह दापपटिका ॥ मलसूरीवदिस

स्यापदनेव प्रजागुदी ॥ वजावलीराधानेव ॥ अहससुसाध्वकल्ययता ॥ दापगि ॥
अलिरीकया ॥ दापगोपधमरुमी ॥ विष्णवजम ॥ धाली ॥ वजराकापवधिरीः
कलावृक्षादिशियके ॥ उद्यवाधमधुलेश ॥ पटमेकलुकरुवी ॥ उद्यवलयिव
रुत ॥ तस्यापवादि कविष्ण ॥ पत्रमधुसमालिशवता ॥ नवमेम ॥ धामरास ॥ सध
वृक्षसलीलका ॥ वज्रधीकिराकय ॥ वज्रकर्तिकपायरी ॥ पूर्ववकाकिरीसवृ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दक्षिणायामं कुरु ॥ इति श्रीभक्तिसहितप्रदीपिकायां
कृष्णार्चनविधिः ॥ अथ शिवस्तोत्रम् ॥ इति श्रीशिवस्तोत्रम् ॥ १ ॥

बुलमिदं प्राये ॥ मया लोकार्थसाधनं ॥ अथ कमबुले कुर्यात्तुष्टयपक्षसु
 लिखितं ॥ ॥ पूर्ववत्सु बुले लिखितं ॥ पूर्ववत्सु बुले लिखितं ॥ मध्य
 क्स्माच्चलं लिखितं ॥ संप्रदंष्ट्रवर्जितं ॥ पूर्ववत्सु बुले लिखितं ॥ तथा ८
 पाताचलं सवत्सु बुले लिखितं ॥ सलिखितं उक्तं यथा माचलं ॥ वः
 क्रोमाहवर्जितं ॥ पीछनं वज्रासमालिखितं ॥ वायव्यलाहितादं वः

या ठावजासमालिखे ॥ १॥ ॐ नमो भगवते ॥ २॥ ॐ नमो भगवते ॥ ३॥
 अथमले ॥ ४॥ ॐ नमो भगवते ॥ ५॥ ॐ नमो भगवते ॥ ६॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ७॥ ॐ नमो भगवते ॥ ८॥ ॐ नमो भगवते ॥ ९॥
 ॐ नमो भगवते ॥ १०॥ ॐ नमो भगवते ॥ ११॥ ॐ नमो भगवते ॥ १२॥
 ॐ नमो भगवते ॥ १३॥ ॐ नमो भगवते ॥ १४॥ ॐ नमो भगवते ॥ १५॥
 ॐ नमो भगवते ॥ १६॥ ॐ नमो भगवते ॥ १७॥ ॐ नमो भगवते ॥ १८॥
 ॐ नमो भगवते ॥ १९॥ ॐ नमो भगवते ॥ २०॥ ॐ नमो भगवते ॥ २१॥
 ॐ नमो भगवते ॥ २२॥ ॐ नमो भगवते ॥ २३॥ ॐ नमो भगवते ॥ २४॥
 ॐ नमो भगवते ॥ २५॥ ॐ नमो भगवते ॥ २६॥ ॐ नमो भगवते ॥ २७॥
 ॐ नमो भगवते ॥ २८॥ ॐ नमो भगवते ॥ २९॥ ॐ नमो भगवते ॥ ३०॥

गी. सु. हं. रु. दृ. ४॥ उं. दं. व. व. जी. प. र्णी. पु. ता. सु. हं. रु. दृ. ४॥ उं. मा. ह. व. जी. प. र्णी. पु. ता. :
 सु. हं. रु. दृ. ४॥ उं. पी. छ. न. व. जी. प. र्णी. पु. ति. सु. हं. रु. दृ. ४॥ उं. ग. ण. व. जी. प. र्णी. पु. ति.
 सु. हं. रु. दृ. ४॥ उं. ष. ष. व. जी. प. र्णी. पु. ता. सु. हं. रु. दृ. ४॥ प. र्णी. दा. पी. ण. धा. ध. र्णी. ४॥ :
 ष. ष. ने. वा. य. म. व. व. पु. ग. र्णी. वा. य. दा. य. दा. क. र्णी. दं. म. ल. सा. दृ. ४॥ य. थ. (७)
 गा. व. ला. म. (८) मा. ह. व. जी. प. र्णी. पु. ता. ४॥ ग. र्णी. व. म. ल. व. ली. रु. र्णी. उ. व. पी. ता. य. ल.

दिकं ४॥ यच्छ्रियाणि प्रहृदयं यच्छ्रमलकल्यना कुर्याद्विहृतिं न ४॥
पूर्वसंवाच्यमष्टमं ४॥ धुलेपविषयव श्रियाणि श्रियाणि मेयुना ॥ कृत्वा ४॥
सायमासीत्तु वदयचमकृमादृ ४॥ ॥ ॐ ह्यकलकलायणी च धुमाहाः ॥
याचक्षुर्गं नुमलपटलद्वितीय ४॥ २ ॥ अथरुणवृत्तादृ ४॥ ॥
कथं हि वा तव वृत्ता श्रियाणि वा तव वृत्ता ॥ निर्विहीकृत्तु कुरुवी ४ कथं ४

हेमहायता ४॥ ॥ अथरुणवृत्तादृ ४॥ ॥ अथरुणवृत्तादृ ४॥ य
च्छ्रियाणि श्रियाणि मेयुना ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥
वृत्ता ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥
कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥
कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥
कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥ कृत्वा ४॥

मात्र क्षेपिकाक्षयि पत्रपल्लिमावच॥ लज्जामिसर्पवत्तु च पक्ष्मीमद्यः
भवच॥ गगनयथावधमथा॥ ॥ न स ह्येवातयिष्यामि न ह्यस्य पत्रस्यै
व क्षेपयिष्यामि॥ वक्ष्यिष्यामि वाच॥ यमादाय गते मद्ये॥ न पस्या॥ ८
मिवादाय न॥ न ह्येवातयिष्यामि॥ वक्ष्यिष्यामि स त्वान्॥ उच्चैर्ध्याया
महाध्याया॥ विका लयि च रात्रिने॥ गगनयथावधमथा॥ सह गामनूतिष्य

॥ विष्णुर्देवायामि॥ यथावद्वत्तद्विरी॥ गतत्रि लोकां० मायेश॥ प्राण्य॥
वृद्धं त्वमूर्त्तमे॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥
वृद्धं त्वमूर्त्तमे॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥
॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥ गगनयथावधमथा॥
वित्रयक लोका इदं कमाकष्य सहकाय पत्रवेन॥ उच्चैर्ध्याया॥ सर्वतथा गता॥

धूर्तदत्तये वाचले नामाशिषका दयः॥ वृत्तिपञ्चाशिषकः॥ ॥ सुनाः
 रुमकूटाशिषकेण कृत्वा सिद्ध्याशिषके दयात्॥ यदमहा देवा पूर्णाहिषामा
 लयः॥ उं रा रा वति अविद्या २ असाह दय हं रुट्॥ ॥ ला हादि कर्ति १०
 का रा हा दक्षिण हस्त दयात्॥ उं कर्त्तिक सर्वमात्रादीनामीकर्त्तय २ हं रुट्
 ॥ ॥ वास हस्त न कपाली दा वीदि कृती दयात्॥ उं कपाल सर्वमात्रादीनामी॥

उक्ते धनय २ हं रुट्॥ रा रा रा वति मूढयाप दद्यात् रा दा का उं दया लेयः॥ ॥
 उं हं छी दक्ष वज्रि सिद्धी ले हं रुट्॥ उं वं छि यी ४ कृष्णादि वर्द्धं हं दत्तये च ४
 या विद्यामात्राशिषि अत्॥ आसीत्तु यत्नाशिषकस्तान् दयायाशिषका द
 यति॥ अथ तु अशिषका रा वति छि यी ४ प्रवृत्तादि शिष्ये यत्॥ रा सो सप्तमी वा
 क्रिया यथो वनमन्त्रिणानि र्था नयत्॥ वृं यी निर्याति रा तु यी ४॥ सर्वका मसः

[illegible]

नदीवदं ॥ अथाहं वदं ह्यनमस्तु दयासि यनागानागतयत् त्वन्मा
 वद्वारणको स्थितिचिन्तिर्वादीपाका ॥ किन्तु न लयं सदृशमधु लयं जगत् न वक्तव्यं
 अथ वदसि गदा ॥ स्वच्छिन्नी ह्यददयस्व ससमर्थय त्वेदं पथ ॥ अगतिः
 अयं स्व ॥ ४ ॥ अथ वदसि गदा ॥ स्वच्छिन्नी ह्यददयस्व ससमर्थय त्वेदं पथ ॥ अगतिः
 अलकाटि स ह्यमुष ॥ स्वच्छिन्नी ह्यददयस्व ससमर्थय त्वेदं पथ ॥ अगतिः

दनेन स्यात् ॥ १ ॥ एविष्मिन्निगवायके समये यदि रत्नासि ॥ १ ॥ गत ॥ शिवाय
कवीभवतिष्ठति ॥ १ ॥ गतो रश्मिपदेवधियेत् ॥ १ ॥ मधुलेपपीणाय ॥ १ ॥ ॥
गतो रश्मिपदेवधियेत् ॥ १ ॥ यस्याधिविद्धेन दधयत् ॥ १ ॥ गतो रत्ना
भवपुद्गायस्य समर्पयत् ॥ १ ॥ वं येन धात्री प्रसासया वदे ॥ १ ॥ यकाधिता ॥ १ ॥
अग्निकामग्नियामृदासिद्धिर्न स्यात् ॥ १ ॥ गतो रत्नाय ॥ १ ॥ कर्तुं कथयत् ॥ १ ॥

१२

उत्तानन्दविहायी ॥ १ ॥ गतो वहिनिष्ठा ॥ १ ॥ उरुत्तनपत्नीरुया लुटकन
वृष्टी गत्तु न्यादवायती ॥ १ ॥ किं त्वेन न हवत् ॥ १ ॥ मदीयायुर्विहृष्टी ॥ १ ॥ विमृष्टी
वज्रकेच ॥ १ ॥ गतो न्याय ॥ १ ॥ ॥ साधनवकवी ॥ १ ॥ किं वादेना न हः
माता ॥ १ ॥ रुदीयायुर्विहृष्टी ॥ १ ॥ कार्या रक्मिया सुनी ॥ १ ॥ यावदावाधिमधुः
१ ॥ ॥ स्यादे ॥ ॥ अहमदीयेपत्नी सर्वसुखसमन्विता ॥ १ ॥ सवययाविध

न न गसादसिद्धिदायिनः॥ कथयन्त्यथकार्यं॥ धैर्यं धैर्यं यथागतं॥
 लयचक्षुमदाया॥ स्त्रिंशोऽयमहासूत्रं॥ गतं॥ धकनात्मानं वक्षुमदाया
 यथाकायं ध्यात्वा॥ एकादशं च वक्ष्यामि धर्मपटं कलां च गतं नन्दाल्लभ
 यन्॥ गतानि च ननु यूपमस्यै कलां यथा सा सादिहिर्लक्ष्यं चैकं कार्यं॥
 ॥ ॥ इति यद्वाहनाशिषकः॥ ॥ इति कथं वाच्यं चक्षुमदाः॥

१२

प्राचरन्तु इति पटलं गीयं॥ ॥ अथ रागादहाह॥ राविगद्यैः कथं
 उपायं लभतां वकं न हि॥ अथ वीकं ननु॥ वदन्ते यमस्यै॥ ॥ अः
 अर्थरागादनाह॥ मना नूकं च के दं॥ सर्वं पटवर्जितं॥ असनीकल्य
 र्ण॥ यथा लपुसमादिता॥ यथैरावय ललादिता यैकं धर्मिता वयं॥
 मयं श्री सर्वल्लोचनः॥ गताददिता वयं जी॥ पञ्च वीर्यं विहिता॥ यस्मिन्

पञ्च गो ध्यायाहिषी तैरुद्युता ॥ पञ्च यत्नानामागच्छ यथा ध्यादिदिदि ॥
 मन्त्र ४७ दद्यात्तथा ॥ सर्वपक्षीयमादयत् ॥ त्रिंशत्तुल्यगमनीकया ॥ आच ४
 नाध्यासमापि ॥ आत्माने च गता दत्ता ॥ पक्ष्या अपि विक्षमयत् ॥ अक्षि धांतेः
 गता ४ कृता ॥ व (धो) चिह्नं तु नाम यत् ॥ नमस्का उक्तं गक्या ॥ इमिहि ४ संह
 यत्नानां ॥ दधि तामसुतमगदि ॥ नमो गधा नमाययत् ॥ ॥ उक्तं नमः

१४

गोक्षानवजसरा तसका हं ॥ चित्तं यदमिहि ईदृशी ॥ सप्तहं वा उपयत्नानां
 कप्यदा दवध्यात्ता ॥ अक्षि अक्षि न कल्ययत् ॥ सप्तमाका वासीकाधी ॥ कृतामा
 रीविहा वयत् ४ ॥ बुद्धसुटिक वत्सु ४ ॥ मा तस देहं विहा वयत् ४ ॥ अष्टा गो राः
 यत्नानां ॥ यं यं लैवैव यत्नानां ॥ निष्ठा नैव हं न ४ ॥ वागवद्विज्ञा लचिका ४
 यं वा उपयत्नानां ध्यात्ता ॥ कदावा यैव कल्ययत् ॥ यत्नानां यत्नानां यत्नानां ॥ अष्टमाकाः

यच्छास्त्रिणी ॥ धाम्यरुत्साध्याकं पत्रैविष्णुमष्टदलान्निनी ॥ धीकात्रवीरुसैरुः
 नीजुजकात्रैविष्णु ॥ पवित्रकात्रकात्रकृतदृढकृतिपन ॥ ठाऊम ४
 द्वात्येकधाम्यासामकासदसैपदी ॥ त्रैकमरुतुयावा ॥ रुममद्विलः १५
 पन ४ ॥ तात्रासकात्रियावनसामकात्रवतसात्रा ४ ॥ रुम ४ ॥ पतोरु
 सात्र ४ ॥ निष्ठात्रवधुपलु ॥ निष्ठात्रवधुपलु ॥ ॥ दत्ता

ॐ नमो भगवते ॥ यित्तये वा सुत क्रयं त ॥ मा मरु मिता रा सु ॥ रा क्रि ता विः
 एक लय त ॥ रा रा हि मा म वा ॥ मा ते यी सं प्र का म य त ॥ रा या ना लि ठी ती
 धाय ॥ दे व के ता स प्र य त ॥ ॐ नमो भगवते ॥ रा म वा ॥ रा म नि ती ॥
 रा क्ता रा क्ता य न ॥ दृष्टा वी उ नि यो उ नी ॥ सी प दा प्र य टी स ॥ रा म
 प्र य म द नी ॥ रा म ह मि ष्टा व ॥ ॐ नमो भगवते ॥ रा म वा ॥ रा म नि ती ॥

य न क ४॥ वामना त्वष्टा ४॥ अक्रा ए क त मो लि तु ॥ नी ले त ला कि
 जी टिन ४॥ य क जी य क मा न क ४॥ सर्वा लं का ल ह वि र ४॥ दि य पू व षा का
 न क ४॥ य क य क द र्य वि रु ४॥ ला व य सि य रि लं न सि द्हा हे च ध या ष टी ४॥ १३
 न मा म स्तान यो वान ४॥ ॥ य र्व ४॥ ना य र् र क र ४॥ मा ह व जी स क र ४॥
 ल मे ४॥ बा य र्व ४॥ म य र ॥ पी गा य र्व ४॥ म य ४॥ पि ष न व जी क र ४॥

शा. १३ काच लेहकं सूय ४॥ ३ का अजा वा वजि ४॥ वायव्य चार्क ५ ४॥ ममा ४॥
 न का न के वू ५॥ वजी सु कं ४॥ मपु ४॥ इति मा वदत ॥ वा दय नि म गो दे व स
 क ४॥ दि ग जा ति रि ४॥ य ग मे गी उ वि व र्ति अ हा दि म धु ल से हा व ४॥ गा रुः
 वि यो ॥ ७ दि द स र्व ल हि मा य ४॥ मा ह व च्छा ४॥ ॥ मा क वू ४॥ वि अ वू ४॥
 हि य द्र मा ह दि य धु न ४॥ मा मा र्क द ह स इ पि ४॥ अ हा वू ४॥ ह वू ४॥ गा व वि द्र न ४॥

पिछुनवचं॥ ॥ कासुठहजिहविहादि॥ अथनहिकउसिपवचं॥
 गार्कुनिसनुवाकवि, अमहाअकलाआ, लाधशा, लाधावचं॥ ॥ यावः
 नमलिडपत्रिमस्त्रिमनिमलछुन, उडदिछुनसहाववि, एमव् अकनदिउः १०
 मउवउसमधिदि॥ व् अवावचं॥ ॥ सपनेवव् देछु, ला, दुवाअटिति
 समुक्ति, पूर्वक, लेवपुपस, ध्यायार्हसपुठासकै॥ नन॥ ॥ ४०॥ तावचैहला॥

माहवजीमुकासयगू॥ अर्प, एवतावलेकला॥ पनपिगावलेहयगू॥ काः
 मयतीछुनवजीनु॥ कलापीगावलासकै॥ हलायकावलेगदलासयः
 दाठावजिका॥ कलायकावलासकै॥ हलाद्यामावलेपन॥ व् अवावजी
 नन॥ कासाकलाधमावलासकै॥ अन्याव्यवगुदवी॥ सहयसव
 मधुल, सपठवैकसासानी॥ रावपलिदुयेयदि॥ अहंकायनगकया॥

सिद्धादेनेवसेवाय ॥ कषूवर्द्धदियाया ॥ सुकषूवल्लहावक ॥ ॥
 पागवर्द्धदियाया ॥ सुपागावर्द्धलावक ॥ सा ल्लहावर्द्धलावक ॥ उक (लो)या
 दियाया ॥ सुउकावल्लहावर्द्ध ॥ धममवर्द्धदियाया ॥ सुधममावर्द्धला
 वक ॥ उक (लो)यादियाया ॥ सुउकावल्लहावर्द्ध ॥ धममवर्द्धदियाया ॥ ४
 सुधममावल्लहावर्द्ध ॥ कषूवर्द्ध गुयानाजी, देववर्द्धाविरावयगू ॥ ल्लहा

लोमेया गुयानाजी ॥ माहवर्द्धाविरावयगू ॥ पागवर्द्ध गुयानाजी पिछुनवर्द्धा
 विरावयगू ॥ ॥ नक लोमेया गुयानाजी ववर्द्धाविरावयगू ॥ धममवर्द्ध
 गुयानाजी ॥ ल्लहावर्द्धाविरावयगू ॥ वजयाजी नवर्द्धा ॥ नोया उवर्द्धाया
 णिना ॥ कषूदिवर्द्धा रंदन, सर्वमगलुकल्ययगू ॥ ॥ अथक^वर्द्धा रंदन
 सर्वमगलुकल्ययगू ॥ अर्थवाकर्म रंदन ॥ पैचरदयुकल्यन ॥ कषूदिमा

पुत्र॥ कामयसि यचिते न॥ यथां कापिनवधं तं॥ वर॥ सुसिद्धिदा॥ क॥
नापुत्रमायुष्यावा॥ ॥ असां कुरु वदं॥ किं कया सर्वमालिहः
यावदियुपिवन्तरी॥ तासां सद्यस्तु सरी॥ तुभ्यं सवार्थं विवि॥ माव॥
दिष्टं पराक्रय॥ न करुणा दत्तापि॥ सिद्धिस्तु इत्यथारवा॥ निरादा
प्रनिर्दिष्टं॥ सर्ववदं॥ रात्रिरी॥ ॥ वृत्तं कलवायावत्तु॥

महा प्रायश्चित्तं देवगायत्र्युत्तरं ॥ अथ तस्यैव क्रमः ॥ सर्वमः
 नमस्तुभ्यं ॥ अथ गायत्र्युत्तरं यथा गायत्र्युत्तरं नाम सप्तमः ॥ अथ तस्यैव क्रमः ॥ सर्वमः
 यमाह ॥ उच्यते महा प्रायश्चित्तं ॥ मूलमनु ॥ ॥ उच्यते देवगायत्र्युत्तरं ॥ दिता २०
 यमस्तुभ्यं ॥ ॥ देवगायत्र्युत्तरं ॥ गायत्र्युत्तरं ॥ ॥ देवगायत्र्युत्तरं ॥ होहः
 यमस्तुभ्यं ॥ देवगायत्र्युत्तरं ॥ ॥ देवगायत्र्युत्तरं ॥ ॥ देवगायत्र्युत्तरं ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

धीरवरा॥ या विना वेदिगार्थय एकितासरुलाक ३४॥ अर्थराठावा नाह॥ निषान्न
 कसथाठाह॥ या विना या विना कसथा ३४॥ रावयदकविर्तनसमयमहा निष्ठा ४॥
 कलायस्वस्मि यगावर्कवचूथषाणि निरय॥ ठान्नवगिरीया ठान्न यथेवसूटगौः २२
 वजरा॥ मातये इदिगयवार्थ॥ रा विना रा ठान्नयिका अन्या करुति ना सर्वा ६४
 विना सा क्कक्षान्ता॥ वधाली नटका केव यजका ययत्राविका वगीना या वि

[illegible]

सर्वोपडववर्जित एव न गामादाय ॥ स्वयं गायत्र्यं कामिनी ॥ वृद्धा देवाचलसि
दिष्टं स्थापयामि ॥ रावय स्वयं ॥ वामदेवमसंधी ॥ निरुत्तरीया
येकं ता यथा लक्ष्मी न वरुण ॥ रावय निरुत्तरीया ॥ अन्तर्द्वयार्थ ॥ २४
प्रियं पश्य ॥ १४ कं ता ॥ सीमन्ती यापयेत्तथा हि ॥ दाह्यं सन्तानं यापयेत्तथा ॥ वामदेव
न्यान्तमीकृतं ॥ ॥ गंगादृष्टिं सूत्रं ध्यायन्ति पृथक् काष्ठमानस ॥ तया तर्पयेत्तव

कवी सुखाह्वय १४ कं तैव च ॥ त्वमप्यगामिनी ॥ त्वमगामिनी मद्र ॥ तव हेतुन १
नीतार्या ॥ राशिनी राशिनीयिका ॥ सुफलि १४ पृथ्वी दीपत्तु मरुदास उटक ॥ त्वमक
पदक की ३ ॥ सावा हेतुमिसा ॥ वतत्र वयासु स्थातिरुपेयैः ॥ वदन्तु १४
वीवाकी ॥ सुखाह्वय १४ कं तैव च ॥ त्वमगामिनी ॥ त्वमव राशिनीयिका ॥
राशिनीयिका ॥ त्वमगामिनी ॥ त्वमव राशिनीयिका ॥ त्वमव राशिनीयिका ॥

पञ्चायक्षशापञ्चमीकृपयामतः सहृदयिनिजाकृ (लो॥) ततः सायप्रभित्तुः ॥
 चमयिहामरुमरु ॥ ददातिशुक्रउसफ (वकुवकुयमीमध॥ पदीवाणवयर्हस्य
 सार्धयन्नगुविगमी ॥ वकचच्चिगदहा (कचनपीउयदं द॥ समरीतनरीदृष्ट ॥ तः
 रीदहाचिवानय (वइरुसादृचीवाकी (रुक्रवेयाचनीमः ॥ पिवात्ररुत्रलेयाहं ॥
 सपिगुपसकारवः ॥ गवावाहासिनीचाहं ॥ साताजात्रलोहपि ॥ मदीयचप

२५

हीवाकृ (चायचीवसनिप्रेतः ॥ ययासेचदितायसा (हमानर्यमपाठानः ॥ कृगः
 सावरावरावन् ॥ दहिमवजगसुखी ॥ पिदलीपैकरीपछयधामधकिजलरु
 पिती ॥ अदासुखावगिरु (चकवर्हाय (छाहिरा ॥ आछिनासुखदंछाने ॥ स
 र्वकलाविवर्किती ॥ सामरुनमसेपाप (वाठाविदलमानसी ॥ रुधपादयुगीद
 ला (समा (धाहंनिजाक्रया ॥ रुउदजनगः ॥ स (धायधयवहाय ॥ दहिधायः

सहस्रलक्षकाटिमथावद॥ सदीयति दलपत्राः सीसवर्ति समन्तिनाः ॥
 खड्गमयपुत्रिणा सुरवेष्टिरूपपञ्चय॥ वायवायस्यपञ्चमसायाहा प्रमनरुचि
 वज्रस्य (७) धासैवर्क उक्तवध्वकसैनिरीश॥ इवनीमिनिगो धायशास्त्रधारयकः २३
 वगसा॥ रावयहस्रकैसो रवी॥ निष्कला वा नृचिरुतः॥ गस्येष्टरुतः पदयादि
 लक्ष्मिपियरुदी॥ यावन्मिदं दृष्टं यूपैः कृष्णमात्रविचिन्तय॥ स्त्रीसकी जननास

लुपिजगती लक्ष्मिखदाशिवाः विद्वत्वादिदतिदयनिः सरववायपापकर्मस्त्रिग
 गासैवद्रयावत्तदनयकैः डसदाइश्रिगाः॥ कुन्दनीवद्रुवदि दठ्यवपमसि
 धनिकलये॥ किंलुवास्याष्टुधः॥ स्त्रीक्षी॥ सर्वसूत्रपत्रिष्ठदः॥ कृपापायदिवाः
 प्रकाः स्त्रीक्षीचिरुपतिष्ठिता॥ आस्ता गावस्वजनैपयजनैमपिपसूतिहिरुयाः॥
 सायंदवपानात्तथा स्त्रीवज्रयातिन्याः॥ आस्ता लुदधर्तनीरामाः॥ सृष्टिवद्रज

[illegible]

दयकउत्तासाद (धायरुमिअपिग ॥ गामन्कनसेह ॥ दिपायअपसाउयगु ॥
 वेध४समपदनकाहय४ ॥ एरुकेअपिसाउयगु ॥ गसापादयवीअके कलावाम४
 ययाअयगु ॥ सीधपिसमरवेअपि ददाएषेस (धार्कग४ ॥ हसुदिमईनेकर्या ४ ॥
 द (धायरुमिअपिग ४ ॥ पुन४सुखदयकला गामरुननयागयगु ॥ सुवतचक
 अ (धोव वजपभनिवंधायगु ४ ॥ गसाजानगलठक कदुछद्वनियोगयगु ॥ अ

अन्तानुवर्तिदत्तं च लसलीकालमिहिसुखी ॥ तस्यापादयवन्देहा ॥ सुखः
 धीपतिनिर्गुप्यै ॥ यत्तु यत्ता अर्थवत् ॥ वक्ष्यते वक्ष्यते यथा ॥ तस्यावासपदं ॥
 सुखं सुखं वासाय सनत ॥ तस्या ॥ सवापदे सुखं ॥ वामे सवाय सनत ॥ उद्धपादा ॥
 यैव धस सखा इह सनादान ॥ तस्यापादगलवत् ॥ सधस सनित्यात्र यत् ॥ ॥
 वा इह लोपा उयत्ता न ॥ कर्मवैध उदाहर ॥ तस्यापादगलनं ॥ कर्मसिद्धिनि ॥

२९

यात्र यत् ॥ वक्ष्यते सर्वतारुदशा सर्वकामसुखपद ॥ विग्रहार्थं लवेयावत् ॥
 यात्सर्वमिष्टिगुके ॥ का उन्नया उयत्ता न ॥ यद्युपायधया वा ॥ यवयत्तु सख
 नसमा ॥ यावदिदं पत्ता ॥ पत्ता ॥ उन्नासवदनेदृश ॥ यत्तु वक्ष्यते वक्ष्यते ॥
 त्रिदो वक्ष्यते रूपा ॥ पितृता लाम रूपा ॥ तत्र यत्तु त्रिदो दनमलमार्गवि
 तावयत् ॥ पाउयत्तु त्रिदो मापदा मयि धनिक ॥ त्रिदो यत्तामिका वैध ॥

धय त्रुकाठिका ॥ दत्तकैवलाङ्गी सलेसर्वश्रुतक्रय ॥ मरुनगैठालेकद्व
 कद्वैकयसूननहै ॥ ॥ चवत्रिंशत्तये दत्ताष्टका मण्डपयमिया ॥ मर्दय
 लाणिनीयव चवयदंष्टायरुत ॥ हयमर्लनिकीक ला ॥ चवयसूदयादय ॥ ३०
 अर्गैवाहंस्ति ॥ ४ पूर्वसू लामरुमरु ॥ हसुनसुर्गयत्यम वायसूदयमिदं व
 दयाचमनसैगने पछानिक्कायादिना ॥ छा लाठाप्रश्नउधं ॥ ४५ धयडसन ॥

यामिय ॥ एविष्टादयथानन ॥ निरुतछाणनकदा ॥ वदरुगुदहीवाकी ॥ पल्लाय
 नासिका मरु ॥ अयमवमरुगुगधं ॥ रावडरुनयाठा ॥ चवयावदसिदं सु ॥
 रावडरुनयथाठा ॥ तत ॥ चमठारीसरी ॥ चकवा मरुसासुतै ॥ रुत्रय उमरुवेत ॥
 स ॥ सपछपछपनपन ॥ सनखीवा ^कक ला ॥ मर्दयदसवत्यदी ॥ मरुकंयु ॥
 रुपैदया ॥ धल ॥ धलधूमधिकै ॥ गतछिगुमया लक्ष ॥ लुयायाठासमादिता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दद्यात् सोमं कामानसंशा यत्तु प्रकृत्या वाशा क्रय सोमं क
मानसंशा ॥ क्रयिगणालिदं पद्मे ज्ञानपात्रं यथा वा ॥ रात्रयं त्वमर्षी धृक् (६) सिरी ३
वापि जिह्वा ॥ ॥ नामयानलिकाया वापि वस्त्रा मध्या वृद्धय प्रकृत्य जिह्वाः २१
पद्मे प्रमत्ता यन्मथय ॥ को जी कृत्य गग ३ य ३ म रात्रयं त्वमर्षी धृक् ॥ पिव इ वी ३
मथे वा ३ ॥ पुनः कामे प्रवृद्धय ॥ धर्मार्थं गति तत्तु ध्या रं क्रयं ते ॥ दिवा यो मुख ३

दिशि ३ ॥ प्रत्यर्चकं मलो व ३ ॥ ददमन्ता नामात्रं ॥ अतना त्वमथा तान साधितः
अमहासरी च धृया मथय दे धरु ज्ञान त्वं वया वापि ३ ॥ वापि नी सिद्धि दानाः
थ वा ३ ॥ मया या ३ ॥ कापि रो ३ ॥ मवा ज्ञे यापि त्वं वा मनी या गली नया ३ ॥ रवा
गाये स लपयी क ३ ॥ सर्व काम स रव य द ३ ॥ अर्ह व न्दा वा न कृ य म त का र्य सू ची यु द ३
कार्य ज्ञान र्णी र सो ३ ॥ सु सु म (६) यु प ल के ३ ॥ क तान न्ता स र्वे र दि वा कामः

सख्युदंशासलेपश्चगथावजे पर्यकमिष्टिकलितेशाडकद्वैचाद्वयलुः
 च धनासमाभिदमग॥ अर्द्धवत्यासनासिनी मुरीयक लसिमनये॥
 पतितासैलितदय्यै गृह्णसुल्लगुवाक्यै॥ पन३हलासनेकला ह्वानराद३ ३२
 गुह्यगदाकय३॥ पारपि लागुतेगसा३सैलितदनासमापि३॥ गइत्यनैसखध
 या अगुयावक्षयागग॥ गगामकंरावओणी सर्वसैकलावजित॥ विजागः

अहिनीचिरु॥ कलामात्रपुकासथग॥ अनयगमत्यापरापथ्य विजागदयमाप
 ग॥ नविजाग॥ लयैपापेश॥ नपथ्यसखग३प३॥ गत३वकामअसा३ख३॥ चिरु३
 क३या३समादिग३॥ ॥ अर्थतवावगीपमदिगदयातवावकनसहलाहिवअ
 वेवमाह॥ ॥ लाहवावकिन३धमवैकवलमवसाधनापाया३नपापपिवा॥
 ॥ ॥ लाहवानाह३॥ अगानयकाथस३ला३सर्वदि३क३वह्निग३॥ देवास३न३

या नाभा कृपि सिधु नि साधका ॥ अथे वेद्यु लाम दंष्ट्रया दया देवा लो जाल ध्या
 र्ज्या प्रणादि देवता ॥ ब्रह्मा लारा वयि उमा यधा ॥ अथ गुरु दस सर्वत ॥ देवता म
 र्क के ॥ बहु या स क्षा प देवा फ वि च प्र नि स हो ग य ॥ ॥ गुरु म दंष्ट्रया व द र्ज्याः २२
 कच ल न मि दं ॥ वातु देवा वज ना य न ल न देव लो वज पा क्षि ले न ॥ काम द
 वा वजा ठ ल न ॥ अथ उ म र्वा र्ज्या न दी वा ल काम मा देव प गु षि द ॥ पंच का

मधु क्षा प ता ॥ सर्व ह लार्थ का य को ॥ ना ना म र्हि ध या ॥ सर्व ह तामा या वि धा ना
 जि ना ॥ यथा र्थ का र व प मी ॥ ये क दो षे न लि ष्य ते ॥ तथा या ठा न या ह ता लि ष्यः
 न न च दा ष के ॥ ॥ ब्रह्म क य वी या र्वा षा च धु म द ॥ या ष क्षा त नु नि स न ॥ य ॥
 वा व द ल द ष म ॥ ॥ अथ रु षा व ला ह ॥ मे प न क र्वा ता उ ला म द ॥ त न्मा प
 वि धु म ॥ त स्य वि धु म ली न ॥ थ ॥ ले क ल ॥ थ व कु म द मि ॥ ॥ रु षा वा ना द ॥

वद्युः प्रसक्तोऽपि तदा हेकाउ धाउकशा यदिव म्भुता दन्ता, दधिपापै नलिप्यते
 तस्माद्वं विधन्नायं तावय चित्तुला च ल, यं तव न प्रकेया नि, जलवा यो डकर्मः
 ॥ ॥ क्षापायं न तु गतेव मा क्रयाति न सैवा य ॥ ॥ म न ४ पूर्व षा म सर्व पाप पूर्य मिदः ॥ २१
 मर्गं ॥ ॥ म न ४ क लो ना का यो षा ति स्था ना दि रु दि ती ॥ वि षे मा म ति तु ते, य द र क्र
 सा दा यू ष क्र य ॥ ॥ ग द व म ति ग क ल ॥ ॥ स ख मा यू ष व र्द रं ॥ ॥ अ र्थ त सिं क्र (६) ४

दवा पुष्पापयमितावजा ॥ ॥ कर्तुं कर्षयका य ॥ ॥ वद्युः प्रसक्तोऽपि तदा हेकाउ धाउकशा यदिव म्भुता दन्ता, दधिपापै नलिप्यते
 हा कु द्वा, व द दी द षा म र्क सी ॥ ॥ म दा यी यू ष के धा ता क लो हे का य म र्क सी ॥ ॥ य दि षं ४
 रं ह न्या, त्सा पि पा पे न नि य तं ॥ ॥ म दा यी यू ष मा थ य, म हा वा (६) क रं ता सा, मा य य
 न त्सा य क्री ष, या ति ना न च लि प्य तं ॥ ॥ नि र्द श षं च लो कु द्वा, मा य ष थ य वि ४
 न क ॥ ॥ मि या स्यं हि पा प न, ता सा म (६) य का षि तं ॥ ॥ ॥ वृत्त क लो वा यः

या छीच धुमदा लाष धातुं दं टणो नप ट २४ धा फ म ४॥ ॥ अर्थ र वा वा नू
 वावगी येवम धुले नमरु लाह ॥ लदीयीया छिनायूरी रू रावी गुक थपीय ॥ रा ४
 वगी वा जाधि ता केन या वा धी वा रू विषयि ४॥ अर्थ र वा व लाह ४॥ ॥ या व दि २३
 दृष्ट्यं लोक सुप्रयुग वन गुय ॥ तस्मादीय मरीयूरी नी वा नी प्रक ले छा रा ॥ देवी
 वासु वा वेव य क्रु धी वा क्रु सा तथा ॥ ना छि ना रू गि नि क न्या कि न्न वा मा न् वा तथा ४॥

धी धर्वा ना प्रका वेवा गिर्य क न्या थ पु ति का ४॥ वा क्रु धी क्रु ति धी व द्या धा दा या ल न ४
 विरु या ॥ का य सा वा क्रु य पी व छि वि नी क ले ड र्ति या ॥ ध ति नि नी वा वि व द्या ४॥ या ४
 सुप्रि ध च र्म का पि धा ४॥ क प्र ति नी ह ति ना ठा मी वा धा ली वा व रि धा तथा ॥ धा विः
 ना सो छि ना य धु ॥ वा पि धा क र्म का पि धा ॥ ना पि धा न टि नी क न् का पि धा क र्म का पि
 धा क र्म व र्म ख टि का क का पि धा वा पि मा पि धा ४॥ का पा पि धा र्म नि वेव सर्व आ ति स

गुणानां सा देवी पिबुन वज्रिका ॥ २॥ का लो जा गुणानां ॥ जा वज्रिका ॥
 हिता ॥ १॥ ध्याम वरु गुणानां ॥ २॥ ध्या वज्रिका कथा ॥ ३॥ ७०० वरु वज्रिका ॥ ४॥
 पंचमय धाम सिता ॥ ५॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ ६॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ ७॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ ८॥
 का ॥ ९॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ १०॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ ११॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ १२॥
 नालिगुनि ही ॥ १३॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ १४॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ १५॥ ध्या ध्या दिशिव मु ॥ १६॥

गता हे पतिता गुण ॥ सर्व सिद्धि दी दामि य ॥ सर्व सुद द प्रपु ॥ एका नाना र वास्य ॥
 दं ॥ एका नाना र वास्य ॥ १॥ सदीय सा न्य पञ्च न ॥ ॥ अनना य धनी ना दं ॥
 गुण सा ध क सिद्ध य ॥ सर्व गु सर्व दानि ही ॥ रास्य दृष्टि य र्थ ना ॥ सदीया ध ध प्रप
 ध ॥ १॥ रास्य दृष्टि य र्थ ना ॥ २॥ वज्र पञ्च स माया ॥ रास्य दृष्टि य र्थ ना ॥ ३॥ रास्य दृष्टि य र्थ ना ॥ ४॥
 सर्व का य न ॥ स माया ध न त न्य ॥ ५॥ ओ जा म यि य दा क र्या ॥ ६॥ रास्य दृष्टि य र्थ ना ॥ ७॥

वदंदाथमवाक्यैः॥ हेतुयत्युतिमादिकैः॥ सौमिकैरुक्तयुद्धाथ सौमिकयुद्धवाः
कैः॥ नपापेहिणगयाही समजधनतयय॥ मदीयमसूकसुवा यामिनेकतः
लय॥ ॥ नरननयययकी वसुसुमयिमाययत॥ जनेनवययातान मीस ३९
मायधयडता॥ नकयाउरयपाय नायकादोउडनती॥ तयकयाउलाकसाः
यावकुकिन्नलहगं॥ नपापेविचरकिचि नपयकिचिदसिहिलाकानाचिरु

उक्तये पापययवावसिति॥ चिरुमागुयत॥ सर्वकृदमाउयतसिति॥ नयकेन
कुतकासो॥ कासोसर्वसुयातिदि॥ यथेवातीकतामह ससकलविषयरो॥ विष
तावापिसुयाति तथासर्वसधनतिन॥ ॥ उवहृतपयिहाना॥ निर्वोद
कृपागवधेश॥ निर्वोदकानागापुपु॥ उदीपसुववातता॥ तकुदवपयनापि
नयधियदम॥ तस्मात्सर्वपयिहच सामवायाधयडता॥ ददासिकृदमागुद

बहुसिद्धि न संशयः ॥ अर्थ रत्न वीर रत्न वरायुक्ता पात्रमितामाह ॥ ॥ किमाकाया
 रत्न वरायुक्ता ॥ सुसिद्धि सुका ॥ अर्थ रत्न वरायुक्ता ॥ ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 विष्णु मयादिता ॥ नील वरायुक्ता ॥ रत्न नील वरायुक्ता ॥ ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ ॥
 हिया रत्नामा ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥

यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥
 यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥ यत्न वरायुक्ता ॥

दृष्टिगत्य यथा श्रद्धा कार्य समादाय ॥ यथा यदेकाग्रमानसः ॥ उक्तं च यत्तदा वस्तु तदं
नास्ति स तावत् विना वा धेयना तदं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
संज्ञा वास्तव्या तदं ॥ निमित्तं वास्तव्यं तदं ॥ कस्य तावत्तदा सुखं ॥ उक्तं च यत्तदा वस्तु तदं ॥
वासीथा पीयूषं विभक्तं ॥ उक्तं च यत्तदा वस्तु तदं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
वस्तु तदं ॥ इत्युक्त्वा यत्तदा वस्तु तदं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥

न त्वत्समासदेकाग्रं ॥ कुर्यात्तिष्ठेत्तदं ॥ उक्तं च यत्तदा वस्तु तदं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥
इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥ इत्युक्त्वा यथा मितं ॥

वायु सर्वकृष्णविवर्जितः॥ न ज्ञाच्छान्नज्ञातश्च सत्यस्य न विश्वतः॥ विष न ज्ञा
 मीतश्च न ज्ञात्ते मयि पावकः न ह्यस्तेषां गुह्यं सीधाम्, सीतवन्तिके दातु नः॥ मय ४ काः
 क्रिगमायं क्षम सर्वकामसमस्तवः॥ न ह्यस्तीति वायने चिन्तामविस्तारवत्॥ ५२
 लोकाश्च न समस्तः॥ यत्तु यत्तु वसीहि तः॥ न ह्यन्यत्तु विमानानि, ज्ञायन्त सर्वका
 मिताः॥ न ह्यदिव्यमपि यत्तु॥ न ह्यन्यत्तु वनमपि तः॥ न ह्यन्यत्तु विमानानि, ज्ञायन्त सर्वका

नमः सर्वज्ञाय ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ वाकानाम् दयासूयाः ॥ किकयाः
 निःसर्वं यत्नं नमः ॥ यत्नेन यत्नं नमः ॥ सिद्धिं याचिन्मातुः ॥ यत्नेन
 हि ॥ नयावज्जधयाकाया ॥ याचिन्मातुः ॥ यत्नेन यत्नं नमः ॥ ॥
 अर्थं नमः ॥ ॥ कथं नमः ॥ नमः ॥ यत्नेन यत्नं नमः ॥ ॥
 ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥

[illegible]

ईसा ॥ निरुम सासुयाग ॥ सहीमाचधुयाचसा दसि नवदियसामि ॥ ॥
 वं खेक लुवीयासाहीचधुमहायाचधुगज्ज धानपतल ॥ नवम ॥ २ ॥ अर्थः
 हठावसाह ॥ ॥ कथं हठाव नुम्ही कथिजकनापि धक ॥ साधयिरीचधुमः
 दायाचधुपद ॥ डतादानधक ॥ ॥ हठावनाह ॥ नहावैरुदवि ॥ ॥
 हठावसाह ॥ ॥ किं हठाव नुम्ही नुदया नहावैरुदवि ॥ ॥ हठावनाह ॥

अन्त्या नच सवत्सराः॥ वज्रपद्युयाताः॥ न चानी पञ्च यदवे साधिवानमपि
सरीः॥ राक्षसाणां कथा विष्टः॥ मधुली कृत्यं मुगः॥ उपवध्यन्दिनीतु पुष्पा
पात्रमिता कृतिः॥ पृथ्व्या सचयनिही दोषधूपादिहिः॥ पृथ्व्या उपवन्दना मेज
कृत्वा त्वं सधुलया ताः॥ न गतु दक्षिणै कृत्वा उद्यो पञ्चा कृता सर्वः॥ श्रीपञ्च
उपपन्न सा दत्त किञ्चन साः॥ कर्मणा दत्त विधीयता सन्त्या न्यो कृति नैय्या

निन्दयन्दिनीयैव साधिवानपि हाउत्तयः॥ वकवी सधुयवावी दत्तवी सान्द्रपता
वन्दयत्तवहावन यथा इक्षान्वधातः॥ राक्षसेव सिद्धि कापि शुभ दत्तवहापिताः॥
अन्त्याथा त्वक उच्यते स्यापि नयक मधुतः॥ स पञ्चासद्यत्तथ सिद्धि सुवीया वानकि
रापसा सिद्धि नैवः॥ उद्यो पाषाण साधनैः॥ निष्कले माहता लनः॥ वाधत निर्मलेश
मनः॥ कामेन वर्क्यतामी॥ मिथ्या जावकी जायतः॥ मिथ्या या जावना ह्ययी पापी

लुप्तकंठगिरि॥ लुप्तकंठकंठकंठ॥ मिथ्याजीवान्महायथा ॥ अत्रावस्था
 धातुसिद्धिः॥ कामानवन्तिनात्मके॥ पञ्चकामास्तथास्तथा॥ तपसात्मानमपीत
 यत्॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 समस्तमस्तु॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 वैकृत्य॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ

खेनाथराशिनिस्तुलवापिदृष्टं न॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 लेश॥ काममात्रपञ्चकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 लक्ष्म्यानिर्वाणनिडा॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 सप्तसुधा॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ
 वर्द्धसिद्धिपुकाकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठ॥ अथपञ्चकंठकंठकंठः ॥ अथ

दृष्टिदा (भाषा) ला १४ सूखी ४॥ वज्रयज्ञसमाया ४॥ तू नखल हत यत् ४॥ सूखे न प ४
यगं वाधि ४॥ सूखे न म विद्या ४॥ विद्या ४॥ क्रियते यत् ४॥ ला के को क ख ए हा न य ४॥
यन यने वगला का ४॥ यानि वद्ध विन यत् ४॥ तन गे ने व यत् ४॥ माया देवी न ह गे तिन ४ः ४॥
सर्व सुगारि धर्म ल क हानि न्दा गु यधि ४॥ ताना छि काप दे हा वरु ह (भाषा) न रा व
या ॥ निर्वर्तनी द क्ष य चापि पी च रु ध वि ना ४॥ ॥ अर्थ रा वा वती पु स्ता पा य मि ता

अह ॥ ॥ कार वा व मा या दे वी स ४॥ का च (भाषा) ४॥ ॥ रा वा ना ह ४॥ मा या दे वी
सू ग ४॥ दे ॥ व लु या व द गी वा ४॥ ल म व र वा व ती (भाषा) ४॥ पु स्ता पा य मि ता मि का ४॥
या व लु मु मि या ४॥ स चा ल ड् प ले व ता स ता ४॥ म ड् प ले व पी स सु सर्व च व पु का
हि ता ४॥ दि धा रा वा व रा (भाषा) ४॥ पु स्ता पा या न वी रा वा ४॥ अर्थ रा वा व ता ह ॥ ॥
क थं रा वा व न्द्रा व का द या हि ४॥ यी र्ध य नि ४॥ रा वा ना ह ४॥ ॥ का स धा

उस्मिन्नाष्टसर्वं ॥ रखा गाय छावका दयशा ॥ माक्रमार्जन नाना ॥ मिथेप सन्निभः
 वेदा ॥ ऐनि धाने रवयय ॥ इल रके कमाटिके ॥ गगु शीसमाप्राप्ति ॥ इयस्यः
 मदाचन ॥ अनाय कामया लान ॥ छदाहामा लमीरुना ॥ विस् नकर्वणग ॥ वे
 मयाप्यगस्य लपिग ॥ गथाप्यगक लोका ल ॥ काटिस धार्थक धम ॥ उकेक ४ संख्याः
 ग ४ स ल ४ स द्वाय लप गाय ४ ॥ गस्याथ राषिरे सर्व ४ ॥ वायु वाधि पुसि दथ ॥ ॥

वृत्त्य कलवा जरा ॥ उद्युमदा पावर्तं तु स्मृपुसि छापट ला दसम ४ ॥ ॥ अर्थ रखा
 वा लाह ॥ ॥ किं हे रखा वे न्ना ठा सि ॥ वा ग या लाना ४ ॥ रखा वा नाह ४ ॥ ॥
 सर्वो दे सर्व बापा च ॥ सर्व क्रु सर्व मा ठा क ४ ॥ सर्व य ध जी वर्द्ध ४ ॥ कर्त्ता हर्त्ता पर ४ सः
 रखा ॥ यनये ने व य प ४ ॥ स ला या कि वि न य रा ४ ॥ नन गे ने व य प ४ ॥ स्मिन्नाष्ट लोकाः
 हग व ४ ॥ कवि वर्द्ध ४ कवि लि द्द ४ कवि द्द मा ३ थ स य क ४ ॥ कवि ल्य रा ४ कवि लि र्य ४

कचिन्नायकयूयकः॥ कचिदेवा इत्युच्यते कचिन्नायकयूयकः॥ कचिन्नायकयूय
 योऽहं॥ विष्णुयूयनसंज्ञायः॥ अहंमुपयूयविः॥ नयसकयूयकचिरः॥ कः
 विदुषा कचिदेवा कचिन्नायकयूयकचिरः॥ कचिन्नायकयूयकचिरः॥ विरुपयूय
 संहिता॥ सदायदृष्टयगं पिरु सन्नायकचिरविद्युतः॥ वरुवमुपयूयवाहं ननाहं नः
 नकाऽपि हि॥ विद्याहं वायविद्याहं॥ सिद्धिपूयकसंहिता॥ ॥ अहं नानिपुहं

४९

मरुतदवाधितययहं॥ अहंपद्यमहं पाय रगतः कर्मरुले तदहं॥ अनावृद्धमयस
 र्वमिदंयूयममेव च स्मारावासमयसाकाये॥ यातिनात तचिन्नायः॥ अर्थरुतावः
 साह॥ ॥ किं रुतावसुवेवं दंयूयः॥ रुतावानाह॥ ॥ रुताववेविधयूय
 यथासर्वमिदंयूयः॥ तया वायमिदं सर्वं॥ अनावृद्धमयसाकाये॥ ॥ वरु
 कलुषीयाययुवावेमहायायानुविष्णुयूयटलेनकादकाः॥ ॥ अर्थरुताः

मनुचिभिपुतावरा॥सर्वोष्ठसि दंया इतिमरवीह गा॥ अथासाधनेरवगिः
 लत्रैजय त्वुर्वसवाक गावरा॥ गग॥कृष्णगिपदमात्र॥यतिदिनेगिसेधु
 यगयावत्यमासा॥ गग॥ इनेसकलीगिगिपसदगित्तजाकला॥संध्याग॥पुह गग
 गियावसूर्यादय॥ गग॥ इयननु॥रवगि॥ गग॥पुहगिसेवकसादिकगिगि
 ॥ ॥अथरुवावरा॥साधनेरवगि॥पठरुवावेकलिरुवापय त्वुर्ववर्चुपुसम॥

तुलमध्यादयत्तुर्वयथाधिमोक्रं॥गगा॥गुत॥कृष्णगिपदमात्रगिसेध्यास
 हपमकेजपग॥ गग॥ इनेपुर्वमासीयथाविरवरा॥पुजाकला॥संध्याकालापुर
 गिसूर्यादयायावरा॥ गग॥रथा न्यन्यचक्रं॥नरुगवीहविषाह॥विनेजपग॥
 ॥ ॥ गग॥रुवावात्तुपमवाठाकुगि॥ गग॥ इनेनसपादयादहापगिहासाः
 गवी॥ गग॥रुवावानाह॥ ॥ गग॥किमउन्दामागि॥सावकेनवकावी॥ ॥ ॥

वृद्ध हेमदेवगिरिः॥ ततो गच्छतां नृणां प्रयु विहारिः॥ एविषमा मुदि प्रवृत्तः॥
 गिरिः प्रवृत्तः सुखा ददातीति॥ अथ विदितं विना न चापि॥ अथ गच्छतां नृणां प्रयु विहारिः॥
 मलिनः कामप्रीतिं सर्वं हृत्वा गच्छतां नृणां प्रयु विहारिः॥ अथ गच्छतां नृणां प्रयु विहारिः॥
 पादका पादलं यथा च कामगो लोभ्य विद्याधनं कवित्वा हि यत्र यत्र क्रिदीयः
 सस्यार्थं धातु वादि वीर्यं हि मरीयां यत्र सर्वं गच्छतां नृणां प्रयु विहारिः॥ ॥ अथ गच्छतां

एकल्लवा प्रलिनवा यतिः॥ पर्वत लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥
 अलिनिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥
 अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥
 कवला रक्षा वा कार्यः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥
 अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥ अथैकल्लवा यतिः॥

यन् ॥ सिद्धासंगीवर्द्धसाधिददाशि ॥ किंपनउन्माऽसिद्धिः ॥ अर्थवापुलात्तादपटं ॥
 रवकुपाठाधयेसाधयन् ॥ अर्थवासरुपर्याकिलीरवकुपाठाकजाहौकातीकुरात्ता
 पुस्तसाधयेन् ॥ सहजवहुमहाप्रापद्यर्ववसिद्धिरावावन् ॥ पटसिद्धिः ॥ अर्थवा ॥ १२
 दावादिदुराप्रतिमासाधनमवकर्तुं ॥ अर्थरवकुसाधनमनसुदायकातिन्माहम
 यीसाउक्काधूमयसायथारिसती ॥ पञ्चवावनपञ्चाल्यसर्वं ॥ १३ ॥ समलीसापर्व

वडाणी कयाणी पण्डितसिंहासनासमकञ्जयन् ॥ मासा नाम हरी न्युजी कलासकलीः
पण्डितयन् ॥ यथा गङ्गालिखितविद्याधरा गङ्गादि नववर्षावृत्तिः ॥ अक्षरिका ४
लक ४ ॥ असे सा उपसर्गकार्मणि सति ॥ ॥ जवे वज्रवकुलिसूतादीना धय
न् ॥ जवे तासादि मय पासे सा धयन् ॥ जवे पट्टा इकय स्थापविता वसुधुगुण प्रस्थापा
मिता पुरुष कर्मयुक्ता दीना धयन् ॥ जवे पट्टा हसद ललाटा दीना धयन् ॥ जवे मोव

धूमययत्रीरुलसामिहडचिविकुलिपुहमीनाधयत् ॥ सार्वाकृतेपादयतिशाः
उर्वेवन्मसयेठाधर्वसाधयत् ॥ वाल्मीकिसमयेठापूठदेवदाप्रमयान्देवान् ॥ वस्त्रविष्णु
महेश्वरं तु कामदेवादीन् ॥ अहमनाथावलिरितयाश्रुसदृशवापूठमस्तुक्रात्र ॥ १५
लिरितयती ॥ मदनमयमनषी हसिदकमयेठाप्रयतिशा ॥ अश्वत्थकाष्टमयेथालयाः
लादिपिअवशा ॥ उवात्मस्तुक्रावलिरितलोयाओर्यादिताकिनीशामनषास्मि

येत्रामदेव कामदेवादिदेवालीश ॥ नाथाकंठालकाष्टमयेवासुकादिनाथानाथिनीः
॥ १६ ॥ अहमककाष्टमयीदाजीरीसुत्रसुन्दरी ॥ नद्याप्रतिष्ठियाध्यामानदीपकिनी ॥
अनूयाथिनीचन्द्रकाका वस्त्र इहितावधूकामच्छरी ॥ यवतीशालोकिनीतत्रवीया
दियत्रिणी ॥ साधयत् ॥ वटकाष्टमयीष्टीदेवी ॥ याजानीकदवदप्रमयातिलारुमा
॥ अष्टादेवीकाश्चनमाला ॥ कुलदाविनी ॥ लसाला ॥ लसु उर्वसा ॥ छीरुषणी

उत्तीक्ष्णाय च यथाहालीमाधयत् ॥ उर्वसूर्यश्चन्द्रमणलेवधैवदस्थगिष्ठकैवातीष्ठः
यथाद्रुक्कुरुश्चनवद्युद ॥ उर्वलोकाश्च उर्वणलिसरूणीपरतिनाधिसत्ताम् ॥ ॥
उर्वविषहाहिरणीयहोवासाधयत् ॥ उर्वमयजिज्ञादीकृतान् ॥ उर्वयसाय
दीन्द्रगान् ॥ उर्ववज्रकणलादीनवेदान् ॥ उर्वसर्वसत्तापुत्राणां धयत् ॥ सः
॥ वसांस्तु कयारवनिः ॥ अथेकलवायनसिधिरिगदायनदितायवायवैक्यम् ॥

मम

नमथायैरुदाहरीयवायनायत् ॥ नमथापिचरुपर्वकृतसदृशम् ॥ उदावासा
जानतास्यवायनाकम्यतावर्कवर्कवन्निधिरिः ॥ ॥ उदावासास्यवापिसिधिरिः
मिः ॥ उदावासास्यवायनाकम्यतावर्कवर्कवन्निधिरिः ॥ उदावासास्यवायनाकम्यतावर्कवर्कवन्निधिरिः
रुद्रः ॥ ॥ उदावासास्यवायनाकम्यतावर्कवर्कवन्निधिरिः ॥ उदावासास्यवायनाकम्यतावर्कवर्कवन्निधिरिः
हन्तितायजयत् ॥ उक्तावायार्वायनासर्वकृतानिददतिः ॥ सर्वण

पुमतादीयगियाऊयगुहा ॥ उदेसर्वरायवृत्ताउदासाउधउद्गीकयाति॥ ॥ उवेउवे
वाउदावाउदासापियक्रकयाति॥ उरुउरुसामिगियाऊयगुहा ॥ उवेसर्वउरुसामाः
वहति॥ थथयुक्तलकमिठनोदेधाहासुषयमेठासावेथाएरुउदागतायानिउ ॥ ३७
पक्तिगयासाहिमसाहिसनुताकिन्नादिगदीगीताउयगुहा ॥ सर्वगंअयसुवक्ति॥
हाउमकाहताकिन्नादिकमथसादयगियाऊयगुहा ॥ अर्थरुटिकायाअर्थरुहा

जावहुयअएदलपया नार्गतेमनुकहासेपटीकहाकेवरुजालनवषयितादाः
उलेवाउयगुहा ॥ वाजासीउद्गीकयाति॥ उरुउरुवाउकमिगियाऊयगुहा ॥ मदनः
मउरुउरुलसाधयल्लिकीकहागद्दिहर्कमनुमहिलिरु॥ उाडिकादि
नाउक्रियगुहा ॥ गता॥ कळकममरुकाहयगुहा ॥ एगिवादिमामरुकाहारीहवति
इदवदल्लमरुकाहयगियाडे ॥ उरुउरुथदिखनगुहा ॥ उवेवादीकाहयगुहा ॥

शक्तिमाहात्म्यसूत्रम् ॥ देवदत्तस्य दयिका लयति ॥ ॥ मानससि
की लयति लोहकी लयति नगरीका च कलकनवाया लयति ॥ तानि तस्य शक्तिः
शक्तिस्तानि वाथा तस्य बहूनि निरवति ॥ देवदत्तस्य मूका ककी लयति ॥ ॥ यस्या ३१
नृदं दायति नरं ॥ तस्य दयति ॥ देवदत्तस्य दयिका लयति ॥ अशितानि तस्य
नरस्य तादाय पदयानि कृपा इति ॥ देवदत्तस्य दयिका लयति ॥ अंतिमं

तस्य ॥ परल्लिका कलकलितानि तावत्ता ॥ देवदत्तस्य दयिका लयति ॥ ॥
यद्वादि कस्य दयिका लयति तस्य कुंक्षितानि तावत्ता ॥ अयमासा दयति ॥
यत्ता यामदिष्ठ वलि दयिका लयति ॥ याप यावदि वाधिमा ययि दयिका लयति ॥
यदा तनाति सन्नि तस्य कुंक्षितानि तावत्ता ॥ अयमासा दयिका लयति ॥
सर्ववाधिष्ठानि निरवति ॥ तस्येव दयिका लयति ॥ दस्य तावत्ता दयिका लयति ॥

मूथकाना (८१४२) कायमयमननीनाठाजाऊ काययतु ॥ ॥ गीजलम (४) अ (४) मखीक
 लजपदाकाठापयन ॥ दनहनननन ॥ शुवणपयति याउयतु ॥ दंवावर्षति अथ
 नैकजलाइदूरीयसपयि ताविसूजयतु ॥ अर्थमययपला कायमूजयतु ॥ सर्वथाः ॥ गे
 दृष्टिसूयति याउयतु ॥ ॥ वृत्तिसाईदंठाकयकेलु ॥ ॥ ७ वैदिति
 यति यमलमकुया ॥ कलु ॥ ददयमकुयमयवमवकलु ॥ एथमसालामलेक

गकायगुं कलकनलिरि तानील वसुसुता लोमावसु कजिराएणि प्रसिवा होकल
 काययवासपटे दलावधयतका धयतसामकसुता जनाठायामिगिकला सर्वजामि ॥
 नाठायति ॥ वधनकाल जाणि लीपुर्वाहि मखीकलु दव्यमल्लरक मयादिपुर्वाजावः
 वसिमययि लण्डेनु लसर्वठ जादया इयसजलुठा शुवणवा न ॥ दधुमहा जावधनः
 वमाहापयिनि ॥ यदि नापसजिष्यथरा दा राठावा कर्कसि फूनखडूनगिले एसायक ॥
 १

[illegible]

नौदसशाहसु क्षपर्वसदाहवगिः॥ देवा नवि (हा) सन्नु दीमलसन्नुवकल्य॥ यथा
 रणवतामन्नुकल्य॥ गथा देवा नवि (हा) पन्नुमा लासन्नुजया कवि लेणहि रीव चीय
 मवसीपयत॥ गगीयमलसन्नुकल्य रगिः॥ ॥ हायनेमात्रुवाम हसु नलि
 ठीष्टहोलासुष्टु हागीजपत्॥ यत्ना नासासा बाव्यदुगि कासयत्॥ मन्नु॥ डं पाद॥
 लिङ्गमकीसायाउद्वेद॥ ॥ विजिकया रणमालिख रमीवा मरुत्तावयत्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यत्प्राप्ता नासा अथाकृतिः स एवैव स फातिमन्ति ते कृत्वा यत्प्राप्ता ॥ ३४ ॥
 यत् ॥ निवाधिरवति ॥ सतसा कल्ययत् ॥ उदकं यत्प्राप्ता दद्यात् ॥ उधिरं यत्प्राप्ता ॥
 वसु यत्प्राप्ता वसु यत्प्राप्ता सर्वत्र यत्प्राप्ता ॥ सवर्षं यत्प्राप्ता यत्प्राप्ता यत्प्राप्ता ॥ ३५ ॥
 दद्याद्देवदत्तं यत्प्राप्ता ॥ ३६ ॥ वासुदेव यत्प्राप्ता ॥ सवर्षं यत्प्राप्ता अतिमन्ति सन्ति सन्ति ॥ ३७ ॥
 ति ॥ अदिष्टाति मन्ति यत्प्राप्ता नासा अथाकृतिः स एवैव स फातिमन्ति ते कृत्वा यत्प्राप्ता ॥ ३८ ॥

॥ लवधति सविता लवति ॥ काकसाय यद्रुवाकाकारवति ॥ ययूषकंठा यद्रुवा
ययूषा रवति ॥ काकसाय यद्रुवाकाकारवति ॥ ययूषकंठा यद्रुवाययूषा रवति ॥
सुकाय रवति ॥ उवयस्य कंठा यामादि यद्रुवाययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥
ययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥ ययूषा रवति ॥
॥ ॥ लवधति सविता लवति ॥ काकसाय यद्रुवाकाकारवति ॥ ययूषकंठा यद्रुवाययूषा रवति ॥

किरवति॥ यस्मिं कार्यसमस्तं नवलिसुपदं रुरुसिष्ठति॥ सिरपुष्पाजीवः
 क्रीयंतावसुखानिवावावकं वावाववृत्तिं वावाववृत्तिं रुलादुलिकाकृत
 यीजायो॥ उं वधुमहायावधुं सीवलिसुपदं अमककार्यसमावरीहं रुद॥ ॥ ३२
 वृत्तं रुरुपुष्पाजीवः नवलिसुपदं निवदयदिविकं॥ तस्यासिमीसिधति॥ ॥ अर्थ
 रुतातामस्तु॥ वावावृत्तिं वावावृत्तिं नवलिसुपदं रुतातामस्तु॥ ॥ अर्थ

रु॥ पिबं वसुधैव कुटुम्बकम्॥ अनेवपुष्पाजीवः किरवति सर्वरुदं वावावृत्तिः
 समास्तामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु
 यत्सर्वं वसुधैव कुटुम्बकम्॥ अनेवपुष्पाजीवः किरवति सर्वरुदं वावावृत्तिः
 नगीरुदं लोकासु यत्सर्वं वसुधैव कुटुम्बकम्॥ अनेवपुष्पाजीवः किरवति सर्वरुदं वावावृत्तिः
 वृत्तं रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु रुतातामस्तु

अथरुणवत्यादृश ॥ स्फुटकीयातिताकंन स तयं वदयता ॥ अथरुणवत्यादृशः
कार्या सिद्धिः कंता धुल्यतं ॥ रुणवत्यादृश ॥ साउलीयादि वेदेषु वर्द्धताः
सनइमका ॥ तेषामवधनं ॥ स तयामिता नावयता ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ ३२
यतिन्यामातये सती ॥ रुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥
पयथा दाषे ॥ रुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥

यनयनेवपायन ॥ स तयामिता नावयता ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥
अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥
अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥
अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥ अथरुणवत्यादृशः ॥

कृत्वा शाविप जात नैव सिद्धिः ॥ न कश्चित् स गुरु फेया ॥ या शाया लोक तत्पत्र ॥ विप जा
त स मयैव न सिद्धिस्तु न विद्यते ॥ पाठना सिन पृथीय निरुता व सुता व ॥ लोक
को कृत्वा ना ॥ थी मया न एक टा कृती ॥ वृदा नी ॥ सुवा क सरी ॥ चतुर्थी ता पिय ॥ ४ ॥ ३४
या हि ला का व ता जाय ॥ सर्व स ला र्थ दे रा व ॥ नैव रा ध न ला व ॥ मय नैव पियः
हामा ला क को कृत्वा ना ॥ एक टा हि ला र्थ दे रा व ॥ ला द न सु स मा य रा ग ॥ ४ ॥ ४४

इक स मयैव ॥ सर्व दा ना हि क थ ता ॥ ज ल मो प्रे हि प्र क र्था ता ती क र्क र्थ या सु थ ॥
ना ना ले का ल का प्र क र्ता ॥ धा प्र य दा ल द द क ॥ पा द या न य प्र का र्थ ॥ म र व ला अ
था क टो ॥ स वा द स रा था र्थी ॥ पा ही वा मे पु धा प्र य रा ॥ मो लो य म ड ही का र्थ ॥ प र व द
प्र या ना रा ॥ प र व वा प्र क र्ता ॥ व म ड क र्ता वि र व य रा ॥ द र्वा व द व य ला ना ॥ ४
अ र्थ या स मा य रा ॥ पूर्व क क ल रा द न ॥ क ला र्थ व पु क ल य रा ॥ क ला या रा म ले का ॥

पायसमायाभनिष्ठलेसरूपिने॥ एका रापाया सकनेच विवा (ननाम
अलिरी॥ गंनोवाचमाखाती वडासलसूपिने॥ दिवुडे के मरुठाने॥ सुरुम
पुनिडीमन॥ रूझणकाकायातु यरूनिठानरुतु॥ यलपयकमासीन॥ ३१
पयचडाताविस्तिता॥ ॥ असेसाचकसतिष्ठ दिवासेरुनसुस्तिता॥ ॥
तनदमचलखाता॥ सर्ववृद्धसुसविरी॥ अचलवैयतावित्ता सर्वयधिकः

जिता॥ सलार्थदिकवृत्ति॥ यावदादसेपुवे॥ अथसमतुडावाच॥ अका
यलकिमाखाती चकायलकिमयता॥ लकालंकिमयता कीदुहातामसीगुहः
॥ राठावाताद॥ ॥ अकालंकिमसुदजसुतावेसिलुके॥ चकायलानः
दययमानदसुदजामन्दाखा चयुयानदसुतावमके॥ लकालंललताला
लिरीसुचरमके॥ अकायालायतापुला चकायलायका॥ पुलायकायाः

(गान॥ लका प्रसखलकदा॥ स एव कल्वी प्रतु एक एक लक ४५॥ विजाः
 वास ईना दो ३१॥ वास एक लक ४५॥ बहु लक ३५॥ समदा वा ४५॥
 वा ४५॥ धना रुय ४॥ सर्व सा प्रविम ४॥ विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८
 ३॥ वा ४५॥ धना रुय ४॥ विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८
 ३॥ वा ४५॥ धना रुय ४॥ विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८

विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८
 ३॥ वा ४५॥ धना रुय ४॥ विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८
 ३॥ वा ४५॥ धना रुय ४॥ विजा वा ४५॥ ता मा वै मह डा दी दि मा ३०८

हा हे कवि रावयं ॥ एका उत कली नालु अन्ना वाध विरावयं ॥ सिधा गं नया ॥ ४
 न्या वा धी दु नसे हा य ॥ उरु या वा हि ती वाध रावयं ससा हि रो ॥ रावता वल नि ४
 य हो वा धि वा क स वा यं ॥ अर्थ रा वा व ला द ॥ ॥ विष्णु दं द व रा य ल ॥ ४ ॥ उमि ३९
 कामि ना य क ॥ पूर्व क स धु ला नालु विष्णु दि स व द पु रा ॥ अर्थ रा वा वा द ॥ ॥
 अथा ग ४ से पु व क्क मि विष्णु दि स र्व ॥ ध ने ४ ॥ ग उ व रु उ से व रु व रु वि हा वा उ रु वा

[illegible]

[illegible]

पि न सायूष तस्य दद्याप्यस्य सा हृद्य हृदी ज्ञेया कथं वा तत् त्वादि विधि वृत्तं यथा ॥ सापि य
 गान्जनयमि इहिरु (६४) ति ॥ (६५) ता उवाच यथा हवता दय वृत्तं यथा ॥ ६६) ति सा उ
 वा ॥ ६७) सीता यमप्यथा ॥ ६८) उवाच वशि तावत्सा ययत् ॥ इहिरु वृत्तं यथा ॥ ६९) ति सा उ
 वा ॥ तत् त्वादि विधि वृत्तं यथा ॥ ७०) ति सा उवाच यथा ॥ ७१) ति सा उवाच यथा ॥ ७२) ति सा उवाच यथा ॥ ७३) ति सा उवाच यथा ॥ ७४) ति सा उवाच यथा ॥ ७५) ति सा उवाच यथा ॥ ७६) ति सा उवाच यथा ॥ ७७) ति सा उवाच यथा ॥ ७८) ति सा उवाच यथा ॥ ७९) ति सा उवाच यथा ॥ ८०) ति सा उवाच यथा ॥ ८१) ति सा उवाच यथा ॥ ८२) ति सा उवाच यथा ॥ ८३) ति सा उवाच यथा ॥ ८४) ति सा उवाच यथा ॥ ८५) ति सा उवाच यथा ॥ ८६) ति सा उवाच यथा ॥ ८७) ति सा उवाच यथा ॥ ८८) ति सा उवाच यथा ॥ ८९) ति सा उवाच यथा ॥ ९०) ति सा उवाच यथा ॥ ९१) ति सा उवाच यथा ॥ ९२) ति सा उवाच यथा ॥ ९३) ति सा उवाच यथा ॥ ९४) ति सा उवाच यथा ॥ ९५) ति सा उवाच यथा ॥ ९६) ति सा उवाच यथा ॥ ९७) ति सा उवाच यथा ॥ ९८) ति सा उवाच यथा ॥ ९९) ति सा उवाच यथा ॥ १००) ति सा उवाच यथा ॥

स वा नृदृष्टिः सफुवधुधुपा लने ॥ वामरूढातडा नृधृथापा लने ॥ हवासेय हाउ
यदसर्वमाउतासने ॥ उक्तास्तधमाउधृष्टि वकुंसा विष्णुस्तहमाउवांसं हं तं उं नं ॥
यं थं ॥ हाकुादवयुमाउधृ ॥ यथासकलमल्लकन्याय हाठ ॥ कमाउादीर्घस्थिति ॥
यमासनायानिज ॥ उक्तसूर्यासन ॥ उक्त ॥ हा नित ॥ यउयउपी हाव ॥ सुउपम हाव ॥
नालविह्वलने ॥ उक्त ॥ यपी पातावटना ॥ उक्त ॥ सीसा ॥ हासा ॥ सीसा ॥ उक्त ॥ थमय ॥ अविद्यादि

पञ्चायतं पञ्चगोनं तज्जगत्तु ॥ ॥ अथ बानी लखाई ॥ छं ताज ले पीतायची वकी
वक्ति ॥ छं सावात थय पाठावता तथा ठावती नी ॥ अथ बानी लख विष्ट धर्म धा
गुहानी ॥ छं ताज दठा हानी ॥ पीतासमता हानी ॥ वकी १५ एवें क्रमा हानी ॥ छं म१ वृत्ता
न हानी ॥ वकी १५ वक्ति न१ छं ताज पक्ष १५ वक्ति न१ छं ताज पक्ष १५ वक्ति न१
पक्ष संहिता ॥ ॥ वृत्ता लखी जायछी बहु महा पाषात नु विष्टि पटल १५ वक्ति

॥ अर्थरुखावणाद ॥ ॥ कथं उत तं ला क ॥ कथं या हाति रु य प न धा कथः
लासेव सिद्धि बुद्धि लेप य म ध्व २४ ॥ अर्थरुखावणाद ॥ ॥ अविद्यापुण्या ४ सीक
२४ सीकायापुण्या विहाने विहानपुण्या नाम प्रये नाम प्रये पुण्या यैव जायते नः ॥ २
वडा य त न पुण्या सार्ध ४ सार्ध पुण्या वदसा वदनापुण्या रुक् ॥ रुक् पुण्याः
मूलादने उता द न पुण्या राव ४ राव पुण्या क्राति ४ क्राति पुण्या क्राया म प्रयेः

॥ अकारपि टं व ३४ न दोर्म न सा ॥ या या सा उवम स म दगा ३४ य रु ध स स व द ४
या रु व रि ४ ॥ ॥ उवम पि विद्या मित्रा धा त स सा प्र मित्रा व ४ सीका प्र मित्रा ध ४ ॥
विहान मित्रा धा नाम प्र मित्रा ध ४ ॥ नाम प्र मित्रा धा ए जा य त मित्रा ध ४ व डा ४
य त न मित्रा धा सार्ध मित्रा ध ४ सार्ध मित्रा धा व द न मित्रा ध ४ व द न मित्रा धा ४
रुक् मित्रा ध ४ ॥ रुक् मित्रा धा उता द न मित्रा ध ४ उता द न मित्रा धा रु व रि या

धृष्टरुवनिआधारातिनिआधृष्टातिनिआधार्जुनामपद्यल्लभकपयिदवइश्वः
 दोषसंस्थापतासंनिप्रधानं॥ उर्वसस्यैवल्लस्यमहताइश्वर्यं॥ अतिआध
 रवति॥ उतास्यात्ययंलाक४पुतात्यैवनिप्रधानं॥ वृद्धायादयैवैतदयैराया १३
 सिध्यति॥ अर्थरत्नवत्यवाच॥ ॥ कथयतुएषावानविद्याविवर्तनी॥ ॥
 अर्थरत्नवानाह॥ ॥ त्रिपयिवरुमिदंकुसुमादिपुष्टरु॥ दादृष्ट॥

कायमाख्याती धर्मसर्वज्ञितविहृ॥ छात्राविद्याहयापा देयाहाने॥ सवक्षान्तयेव
ध्वयैचिरु॥ छात्राकायारवताहृथ॥ तस्मान्कायारवतिसवगुविध॥ तज्जाः
यकायसेकाय आहमसपुष्पसोवाकैस्कायोवितर्कविज्ञाये॥ सन॥ सस्कायायाः
क्षयमाह॥ अहियकाविद्यापसतिपुष्पसतिवितर्कयति॥ सुप्रवृद्धातिविद्यायय॥
सूक्ष्मवृद्धाति॥ अनन्यकोरवति॥ दशमसुवृद्धावति॥ तस्मादिहानैरवति॥

पञ्चकायं चतुर्विंशतैः॥ अथ विज्ञाने द्वाविंशतैः विज्ञाने कायविज्ञाने
सत्ताविज्ञाने अहियुक्त इविद्यापञ्चति॥ द्वाविंशतिजिह्वति रुद्रतिष्ठत्यतिवि
कल्पयति॥ तस्मात्तामयं नाम च त्रयो वंदनादयः॥ यूपयूपमवति द्वाविंशतिः ॥ १५
संक्रियपिधुयि तानामयमिह के॥ उपादाने पञ्च कथं यूपयूपविद्यापञ्चतिः
तार्थ्यः॥ तत्र वंदनातिविधा सुखा इहवा इहवा सुखा वंति॥ संहारसुखा खेपः

पञ्चदशकायति लाघः॥ तस्मात्तामयविज्ञाने इव सुखादिषु॥ विज्ञाने च वि
ज्ञानानि पूर्वकानि अवयुपञ्चतु तानां के॥ एषि वीह्युत्ते तानां के॥ अथो डव
तेषां तिष्ठति तले अतिष्ठति तले॥ तत्रो डव तेषां तिष्ठति तले वाया याक कल्पसा
क्षलसुसुदाय तले॥ तस्मात्तामयतानि चतुः॥ अथो डव तेषां तिष्ठति तले॥ ॥
अहियुक्तपर्वतु तानां के॥ तस्मात्तामयपञ्चतु तानां के॥ तस्मात्तामयपञ्चतु तानां के॥

का प्रमाण या सी दृष्टि के प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 मि ॥ ततः ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 प्रमाण म मि य का म य त् ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 ततः ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 पाद दा मि ॥ ततः ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व

च जाति र्म ह मा ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 ॥ ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 सिय ता न व ति दृष्टि के प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व
 ति र व ति ॥ य रि वा स्मि र वि ष ति न दा र वि पि रा य् वा (वाम) व ति ॥ त वि सा त वि
 व दं ४ ॥ ततः ४ पर्व कर्म का प्रमाण विनिर्मुक्त ॥ इष्टा सुखा वद न रा या वा म (वाम) व

लाञ्छनं कृत्वा सिद्धिरुपगम्या अवकासात्ता अतिष्ठति॥ ततश्चैव विद्युत्कृतिः कायतं॥
तदवमविद्यादिरित्वा काञ्चीतं लाकाञ्चीयन्ते न्या॥ अवकाश इह स्वर्गसावित्री
पञ्चसूक्तं॥ मन्त्र इह स्ववकाशमस्मिन्माकाशं नाकविद्यादिति याधालुधा॥ १००
एवञ्च नाकाञ्चीकृता॥ नचतुक्कुनकाशमकाशिनः॥ तस्मात्तदावासाका
शमार्थताव॥ तस्मान्नतावासाकाशमार्थताव॥ तस्मात्तावविद्युदिति यद्वृथाय

संपूर्णमहासूत्रं यद्यपि लीलासदृशं तन्मात्रं तत्केचनानेकमर्थं चिरं ताव॥
निर्वाणपुतिवितामाकाशं॥ यादौ चैव तावत्ताकाञ्चीकृता कृताकाशं॥ अ
वलायं यद्यिह नावदसिद्धिस्तथाति॥ नचलति ताकाशं॥ सूत्रं यत्तद्वि
तश्च यद्विह॥ विधनायमस्मात्तदवलेसं कृताचकथिती॥ ॥००॥
कल्वीयास्वच्छावदुमहायावदकल्वीयास्तदावदवदल॥ ॥००॥

॥ ॥ अर्थरुणवरा दृष्टा ॥ नाथ देस पट्टे छुक्क कलि वा रासुनं यवर्द्धकं
गकरी वा वृद्धि लेना नाना ॥ ॥ श्रीमन्नावध्या गा हा वा रुद्र या क प्रक्षालयि ॥ छुक्क
साम्भूना इक डावक्ष दुदिया नवी ॥ अर्थरुणवरा ना दृष्टा ॥ ॥ साध साधकेः ॥ ८८
गी दचि ॥ यदहम ध्यायितुं लया वक्रता ना विधे तत्र ॥ ६८ ॥ लाकार्थ सिद्धय ॥
छात्रा यै (छात्र) धय दा दो ॥ यच्च ह्यस्मिन्मात्रे ॥ ६९ ॥ कं वक्तुं कृती वक्तुं ॥ ७० ॥

महाप्रतिपद ॥ गिरुलाका थसा ब्रह्म यवक्रात्रय लासके ॥ पनाजी वा जयधदी ॥
कचि ॥ शक्राणि लघुगणानि लक्ष्मीर्ज्योतिषा चानमः ॥ कंरा का छत्रसे ते ले ॥ ७१ ॥ हिज
मात्रात्रसंधावी ॥ या लालि लायरा डोव यूकाना ॥ छावपदगा ॥ ७२ ॥ कंरा का छत्रा
से ते ल पिवं लवक्षसीयरी ॥ योउगुमक्षया ॥ छान राव लवक्षना छात्र ॥ ७३ ॥ हिजः
मात्रात्रसंधावी ॥ साधवन वसेतु ॥ क्राया या अस्ति ति क ला रावति रुसामा

श्री ॥ कंठ्या च यस्य ते लोका यमलेश्वर ॥ यानयां गिरवरे लनाथ
उवेन सीधाय ॥ यस्य कर्मा धुमश्रया ॥ ४ पिवत्तव दसैय ॥ चर्द्धना का रवदः
ना ॥ ६५ यो धाम धूमधुम ॥ ७ कौकटिदिन कर्मा लब्ध दो वधर्मा चरत् ॥
गने वद लदंग च निसुले वा नाथा प्रिय ॥ ८ मल्ल ली व लो ले चर्द्ध ॥ ९ तफम
छल रत्रय ॥ सफ धाम निरी क लो पा र चो हा न न के ॥ ६४ ॥ य ह दे या व

१२

श्री वरु ॥ ७५ क ॥ ७५ मि वि त व र्द्ध न ॥ ॥ ७५ उ च धु म हा वा व ल व्द दं दि वा म
री म क च र्द्ध रु द् ॥ मटि ट मालि क ले च त व नी री वा पि मा दि सी ॥ वा ल म ७५ न सी
य के म दं वा क यस्य र वेश ॥ लि ठा क र्द्ध सु ना ना मु ॥ रा वा सा पि वि स र्द न ॥ स र्व
का य वि स र्द ७५ व र्द्ध न ग न सी धाय ॥ नि न र वा र र्द्ध ना क ल ॥ उ र्द्ध यि ल च रा न
व ॥ या नि स ७५ पु क्रि ण सु ध य उ ध व र्द्ध न ॥ दा ठि म ल व ७५ व ल ७५ य न

षष्ठोऽङ्कः ॥ सुनविमर्दितीवर्द्धः ॥ नृत्तिकाकार्थमङ्कः ॥ ६० ॥ सर्वपञ्चकः ॥
 ललाटः ॥ दन्तः ॥ वक्त्रः ॥ सप्तर्षिः ॥ गङ्गा ॥ नृत्तिका ॥ वक्त्रः ॥ वायव्यपिण्डः ॥
 ६० ॥ पञ्चाङ्गिता ॥ सुतः ॥ सप्तर्षिः ॥ नवना ॥ नृत्तिका ॥ वक्त्रः ॥ सप्तर्षिः ॥
 कटः ॥ पञ्चाङ्गिता ॥ सप्तर्षिः ॥ नवना ॥ नृत्तिका ॥ वक्त्रः ॥ सप्तर्षिः ॥
 ललाटः ॥ सप्तर्षिः ॥ नवना ॥ नृत्तिका ॥ वक्त्रः ॥ सप्तर्षिः ॥

[illegible]

ति॥ द्रविता लहा ॥ ४० ॥ इवि छुव क्रा जहा (लो वै ॥) कदली क्रा जहा (लो वै ॥) अ
नपिष्ठा लपमा गुं क्षरु वा क कलि ॥ नौ जामना ॥ ४१ ॥ ॥ गगो दा ला ह ल स र्ण
पक्षु चूर्ण मिष्ठि ती ॥ कटु गे ल स र्ण ह स्त पि ती ॥ गन लि ॥ दि वै म क य त् ॥ न प ॥ ४२
न ॥ क ॥ ४३ ॥ इ र व नि ॥ ४४ ॥ म दि ष ॥ क ल ह सि ग र्क ट स द रें ला र्णो म र्द ना लु ना जी ती
व र्दि ॥ जा ति ष र्ण ति ल न पि ष ॥ र वा म र्द र्ण य इ च सि ती र व ति ॥ म दि ष न व ती

व या क ट वा ला ता वा व ला रि म द ना लु न व र्दि ॥ ग फा द क क ल ना व र्दि ग लि वा स द
रें र व ति ॥ द लु म ल म ली वा वा च गें न पि व र ॥ अ र का ल वा रि वा र व ति ॥ अ र व
वा म ल य गें न पि व वा दि वा र व ति ॥ व ला इ ति व ला सि ग र्क जा ति ले सा रि क म ध
य र्क पि व वा दि वा र व ति ॥ वा ला म ली उ द क न पि षु पि व इ क प वा द ने वा य ति ॥ ॥
य व चूर्ण (वा म र्ण स र्क उ र ग पि म ध य गें ना द र्ण ल र्च वा रें र ड र व ति ॥ व या द वा ना

मल अरु काल कर्षवधना ठाहि दीरवति ॥ कलमो धमवीरु चक्रवर्दि ॥ ॥
 मधुपदधिरु (धनछु) क्वर्दि ॥ छु क्व (धमदि) गरु धम चक्रवर्दि ॥ सु मधु सु मय
 ध (धम) लयि लापि वरु छु क्वर्दि ॥ असल का यर्षु जलन य रं न म धना वा वि का ल ३ ६२
 वलि हरा ॥ उरु मी ता यर्षु रवति य ह्ना अरु न यति ॥ असल का यर्षु गिल यर्षु य र म
 धना र क यर्षु (धे) वरु ले ॥ (धम) लर वरु छु लाम ले अरु ठा धा गिल य वा नु धम स म्प्री के

एरु य सो वने न यति ॥ अरु न ल कर्षु इच्छा दि ना र क य र ॥ वर्ष य का (धम) न गि धा रा
 य ॥ असल का ल स प ले के ॥ वा क यार्षु कर्ष के पि व त्या ठा रू छि क्रा उ र क नै मा स न प
 अरु ता य ॥ वा क यार्षु कर्ष के र क ठा जल न की जि क न इ (धम) न या व र ॥ धम स
 न य वा अ य र ॥ य छु यार्षु य र न र क य र्मि स फा द न दि य र व र्षा क ति ॥ स न वा ज
 यर्षु प ले के उ क व र्षा ता वा क य र म ठा ज व र्द य न उ ध य न उ ध य र्म म ठा ज व म के क य र्म

लासनादिके गुरुद लापवर्तुता रयम् ॥ जीर्णदुष्पन्नता रयम् ॥ वाताग्न्यवर्जिता
सकादगुयेया वचनक्रिया ॥ आर्कप्रक्रियाशाता ॥ कथमादयः पतितियतनरुहिवः
किं ॥ ततो वलिपलितगुदितो जावति छाता नियय प्रकाशमूलेयतामधनवि ५२
जालपदमायेतु क्रयं रुधेव रुल ॥ अमलकी हजागको रुवा जात पिण लीम जा
वलाहवर्धनि ॥ मधुवाक्यं जाली डडमप्रयसाधुठिका कुर्यात् रुता धुतिः

केकेरुक्रयं सनति छाताय ॥ कृमालीपलसकेष्टुतदधियकेरुक्रयम् ॥ सः
फहिनति छाताय ॥ यवति लाञ्छना धाना वावला माषान्दिद्युद्युतनरु
यसहावला रुवति ॥ रुडाली धुद्युकेयि धुद्युहजागका चकेरुला रुक्रयसः
हावपः ॥ सर्वगुलमाने देवता कार्ये हावयम् ॥ मनुष्याणां च धर्मसधिसिध
म् ॥ ॥ रुद्रक लुवी ला रवा धा यद्युमहा वाप धा गन्धुकादि वृद्धि पटल

सफ दशास ॥ ॥ अर्थ रत्नानुहा ॥ ७३ धुमलेपि क्राहिनाम दयातुहि
 यहा प्रविनयति ॥ ॥ क्राहासु लोभ न प्रसवावी मरीस सेवक कर्षय कर्षया
 वनाहा ॥ ७४ कर्मकट गेले वाक्यार् ॥ कटकेपि लोभ अलकी दयि डावचा ॥ ७५
 लिहि प्रहावटि कीक र्याना सर्वचक्र या वनाहा ॥ मधुपि लोभा अर्थतः
 कर्षयथ मधना अर्थ डावचा वनाहा ॥ कटाक मनीत्रय सर्वचक्र या वनाहा ॥ ७६

काजिराम गेल सधव इवा मलेकता नुप्रिय सुअर यचक्र मय गहा थायहः
 लेद या लोभ दलनी ॥ ७७ अयक कजरी इवा जरी दठि सपण य सम लयि लाताम
 नद्या नाहि कया यक न केंसे पि पहावति ॥ ७८ काका इति य मले गधु या सकेंत म
 सहाय यकी न छवति थाच रुले या लकी का ल म ले गधु ला दक न पि वेत ॥
 नासिका यो न्द नासिक या यक न छवति ॥ ७९ हा लि का म ले च व धा हा ले धुः

छाविनध्यति॥ छुजि लमूल नदनको देविना हा॥ ॥ (छाचरी मवाइ
छैक कर्कट पुरुना देय स लाद मुद्रा ला दना कटकी नध्यति॥ मूल कची उ पि
ये छुचक व नदी क प पि पू प रुना तर्क छादि विनध्यति॥ दवि व मो स छु॥ ५३
क क ग ना उ छ पि व ल ल म के रु य था ना हा॥ माहि ब द धि र क हा उ ना॥
द रि मा य ना हा॥ आ म रा का स ना ह था॥ क ट उ व ल ल हा हा द ये॥ म यो

च छु छ छु छी ना मे क हा ठी ठा वा त क छ पि व रू॥ छु ह नी ना हा॥ ॥ अन ल
की पि य ला चि र क म आ ड के प या त न छु छै छी म व स मे र क य रू॥ वि का
ल का हा मा स वि ना स ने॥ द जा ग का च रू म ध ना ग था रु दि यो हा क न यः
व या वा हा र क य रू॥ क रि आ ठा ना हा॥ आ ड के जी य क क द धा म छु न वा॥
पि व ल व न स दि री म रू क क वि ना हा न॥ हा क या य व रु य स मे वा र य रू॥ सो हा

नमस्तु कथं तपि वदेत्सुजायति॥ हयितकिचिनु कसडे कचससु नपि व ली ह॥
 नाछाते॥ जाउ के गुउ नरु यत्॥ क आ वा ता वि न्य ह्यति॥ य व क्रा प्रे द धपि च॥
 दामवा तना छा द ज ग का छु डी र क्रय पुा स वा त ना छा क ट गु री वि उ य न्द लो म छु को ८/३
 प्री पि व द वि दी ण गि कि स या वि न ह्यति॥ हयित की गु उ नरु यत्॥ इ ना
 सा वि न ति॥ हयित की छु धा र क्रय दाम वा त ना छा॥ इ च द वि ड य पि कू ल

पा ल कू ना छा॥ अ न ने व द रू वि स डे क उ र्द क या ता दि के ना छा यत्॥ ॥ का
 दाम र्द का म ली की त्रि के न पि कू य था गु ठे क ट रौ ल न पि वत्॥ ॥ वि००॥ ॥
 छम सा वि न ह्यति॥ अ रू न ल ये य ता दि ना र क्रय यत्॥ ह द य स वा धा ना छा॥ वि ले
 द ग्या गु उ नरु य ड के ति सा ज ना छा य॥ मा रु ले वा च गु उ न पि व रू ध ल न ह्यः
 ति॥ छु ठे र वि ना ग स द या न र्व छु म ना छा॥ क ट के ध ना रू य न र्व क्रि या ठा नाः

ॐ॥ कौञ्जिके गे लसे भवे इवामले च कासनिष्पण्डना च ॥ ४६ ॥ लना ॥ ४७ ॥
छु उ स्या नो छु उ (छ) षा ना ॥ ४८ ॥ छु उ छ ग न र क य द्वा त पि र्हु (छ) षा क षा द या वि
न ष्य मि ॥ ४९ ॥ शि रू ला च र्धु य रा म ध ना र क य त्त्व यो ना ॥ ५० ॥ द या र की च र्धु ॥ ५१ ॥
य रा म ध ना वि का ल आ लि व लि ह द्वा र (छ) षा वि ना ॥ ५२ ॥ वा स क र्पे चा ॥ ५३ ॥
चा व ऋ षि षा ली च छु ष च र्धु क र्पे स ध व न म ध ना च व ढी क र्पे रू ना र य द्वा र ॥

(छ) षा वि न ष्य मि ॥ ५४ ॥ स ख र्पे च म ध र्पे र व ति ॥ ५५ ॥ व ऋ व चा छु षा यि षा ली द या र की ॥
वा स क र्पे दि उ च म ध ना छु षि की क र्पे र क य र्पे व च र्धु ले ॥ ५६ ॥ प षा ना छु षा द या र
के से भ वा न्ना मार क य त्त्व यो ना ॥ ५७ ॥ ॥ प ड वा उ र्पे म ध ना पि व ल्य म द ॥
ना ल्य म द ना (छ) मा स र्पे क ले ॥ ५८ ॥ इ ष्य पि षा ली च र्धु य रा म ध रि ॥ ५९ ॥ पि व ढा उ द ॥
डा वा का मा द या न ष्य मि ॥ ६० ॥ ल षा छु उ र्धु र्पे च म ध ना द क न पि षा ल्य

गवा नाह ॥ (६) गवा ॥ वात्रि गाम ले ॥ कुं वटि को क ल्वा गि ल क न व धा रा व ति स्तु ॥
॥ ॥ वृक्ष द धी व वा क र्षे म ध ना लि ठा म द्वा रु मि ये वा म य द धा ना म य रि ॥ द ॥
(६) म्वा ला म न क र्षे गाम ल न द धा रु था वृक्ष द धी वि उं ठा क्क व वा क र्षे ना ठा क म २०
ले गाम्ब न द धा द धा रा व ति ॥ ग द रु धु के क म य क षा य पि ष्ठ ॥ अं लि ष्ठा का म य ॥
द धा रा व ति ॥ अ द धा नै डि ॥ रा सी ठ र्क (६) वा य ना ह ये रु क म म न रा व ति :

ल क न व धा क र्क ॥ ॥ रु वा वा ज म ल सा ल धु क षा उ न्ना रु था (६) ग क य ल क क ल
वा य क न मु क य रु ॥ ॥ ॥ न ध म न म न ध य पि ल मि ये द न्वा द धी रा व ति ॥
म य र्छि र्वा का क डि द्वा म ग म्वा नि म्मा ल्धु क र्क ॥ य म्वा ॥ डि य मि की य गं सा
व धा रा व ति ॥ या गाना ह रि ण ले न वि (६) व न का ग वि ष या पि ष्ठ रु व न ण न द धा
द (६) रा व ति ॥ वि ष्ठा ना म ल न लि (६) लि ष्ठा य म द्वा रु था ॥ य म्वा न रु ध म्वा

यस्य रुले सैष्ठ्यं हृदयं न कुरुषु वत्कले हस्तपरीचि यथापेक्षामले समता वा वर्धः
मधना वटिकी कथा लण्डवधु (हम ययत् ॥) गामलन दया गही रुवर्धन वधा
कप्रक्षी ॥ डल्लरु क कप्रस्य दक्रि क्षाणु ल्ताम काश प्रक्षय स्याताम लिखा गजम ॥ २१
की ज्ञाति सिता वा चरुति ॥ निदमा (हो) गाय यत् ॥ मय प्रक्षि र्वा यय मलन रवा
दो दया द (हम) र वति ॥ अय जाति गामले पय ड त्या य क र्ण क्षाणु कृति प्रते लन द

कया लंक अले पा गय रु नो न ना मु यय र्ध वधा कजाति ॥ द (हम) त् य म ले य य मय
दया दधा मा प्रयति ॥ विडि गाय प्रे कर्ष ॥ मदि प्रया दया दनि कु ना क्षयति ॥ ॥
मन क्षि ज्ञाता वा क क्षी प्रवर्ध पि यै वु (हम) जाव नाति प्रक्रि मक्ष य दधा कप्रक्षी ॥ कल ॥
अ लता धरु प्रकस द देवा रि ॥ क रति ल क र्ण ला वी वधा ना नयति ॥ उं वल यि र्क
वि लि र्व ल र् य गो म व र् र सा हा ॥ ॥ हलि वा सा थ यि य क क न वा य क स म ॥

सहस्रसहस्रमर्क॥ अथ नामविदितमयसा १ मयसा मनुष्यसामुद्रिकाविधा
सायसावध्यावति॥ पूर्वसंवादहासदुसुहिनामपतिरीकसा॥ नमः३३४
अनामकीवकूसाहा॥ ॥ सेवायरीधमधमनरसकुकुचयदध्यामः ॥ २३
खरुनारागिरिमलिकाकलाकुडिपसिदयादहावति॥ अत्रसल्लिहासादा
यकदीधमधमनसुरीके॥ कउठकसाथवायकुवधयकुगननशाससुरीः

कमना३कुर्वनोथनथेयथाहा॥ निष्ठयिषवसुदाससाधुकसुसमर्कमी
॥ मल्लसिगकाकिलायासधसुपसाथवाहप्री॥ सकककुडिआदहवर्क
नावकुसुनपसुमीकसुथाशापवासपादसिर्वधनवकुसुम॥ ॥ ३४३४
गपुलीमलेववधयंकुसुसुन॥ सहमलेसधमलेयदिसुनकेरुयसुथ
नासुर्वकुसुनसर्कमी॥ ॥ कउ३कापिहाउपापदनपयय

वधना चकटो सुगुणकृष्ण लभ्यते ॥ डाक प्रसूतु ते लेन ला काने निता ॥ ६० ॥ क
 हल यल यदीप का लय रं कु कुरु मने क सी र ते ले वा य सं क ने पा द त ले म क रे र
 छ के कुरु मने ॥ ६१ ॥ छीत का क डी घा म ले छीत य म कं का प्र म ध रि ल य रू क कुरु न ॥ कि म ॥ ६२
 का काम ले य म प तुं व विष त्ता डा व ल य रं कु कुरु मने ॥ ह रि ता ल सी क न या प्र
 द पि ण ली से श्व व क रू म ला व र वि ष क पि ले षा ड व रू ना रू क कुरु मने ॥ ॥

ड रू व ला व रू श्र अनि च रू लि षा ल य य ड रू लि षा र व ति ॥ वा पि क रू म ले द पि ष ४
 दू षा म रू पि षा लि षी लि षा रू म श्रा रू ट य डा प्र गु य रू र व ति रा फा द क रू ल ना रू
 शा नि ॥ क य द का ल क प्र य प्र द य यि ला म रू रू य य रू ॥ रू क कुरु मने ॥ दू षा म रू ॥
 ध रू ड वा प्र सी स फा हे रा व य रू ना रू रू र व ति लि षा ॥ डा ष रू म ले का सा री म ले ४
 ध रू प्र वा रू क रू प्र ज ले न पि ला लि षा ल य यि ला मि री का म य ड व ति ॥ से श्व व रू ट य ४

क्षकण्यउदावकयर्गुमधुनापिहलिहल्लयार्कधाशायावतपयार्धमधुनापिहल्ल
लिहायुल्लिणकमयक्रयति॥ कामायासुलेतासुलेनसुयतक्रहलिहियेहययक्रयः
तसा॥ यक्रुतिनिगालसिकासेधवममिछाकल्लरुक्तुल्लिल्लिणरासु॥ ८७४ २८
क्रिष्णवडाधाल्लयानागुक्कालययायसाक्रयति॥ कययटठवयायदहलि
पिणलीसधुल्लिणक्रयतिमु॥ यामइतीसुलेसययवचयिहलिहायक्रिण॥

कामययक्रयति॥ त्रयसासुयकेत्रिहागुल्लवकठिमु॥ यामइतीसुलेसययश॥
तयागोयामिणल्लयनवध्वासायानसैहाय॥ पिष्ठापलाहावीत्रनुल्लययमः
धुसुयिषायायनचक्रविणुसुवध्वासायानसैहाय॥ हायरायवावर्द्धर्द्धर्थ
यनोहायागादाहवति॥ ॥ वृत्तकल्लवीयासाहाचहुमहायायव॥
गनुहुकसुम्हादिपटल॥ डनविहातितान॥ ॥ अथरुवावतीरुवा॥

[illegible][illegible]

छाद्यं कर्म कृत्वा उच्चैः शुभं हावा च क्षैत्रं दृष्टुं ॥ ४५ ॥ न कर्णं टल्लिखि त्वा नीलसूत्रं ४
क्षेत्रं वा हो कल्लिखि कर्णं वा ध्यायन् ॥ पत्रयत्नं न रावति ४ ॥ ॥ उच्चैः
शुभं हावा न शुभं शस्त्रं शस्त्रं हि २ ॥ ४६ ॥ पत्रयत्नं न रावति २ ॥ ४७ ॥ न कर्णं टल्लिखि त्वा नीलसूत्रं ४
कर्णं टल्लिखि त्वा पर्वपरुल्लिखि कर्णं च लघुमानं नास्ति कीलकं न लाह ४
कीलकं न वा कीलयि त्वा ४८ ॥ न पञ्चमं मन्त्रं कर्णं न निरुत्तमं ॥ ॥ सफादं

नमा उच्यते ॥ उच्चैः शुभं हावा च क्षैत्रं दृष्टुं ॥ ४९ ॥ निम्बसूत्रं कर्णं वा सेव्यं
त्वा ४९ ॥ नास्ति नाद हर्षं रासायनं वा नास्ति मन्त्रि तीष्ठ हप टल्लिखि यत्नं ४ ॥
॥ ॥ उच्चैः शुभं हावा च क्षैत्रं दृष्टुं ॥ ५० ॥ नास्ति नाद हर्षं रासायनं वा नास्ति मन्त्रि तीष्ठ हप टल्लिखि यत्नं ४ ॥
उच्चैः शुभं हावा च क्षैत्रं दृष्टुं ॥ ५१ ॥ नास्ति नाद हर्षं रासायनं वा नास्ति मन्त्रि तीष्ठ हप टल्लिखि यत्नं ४ ॥
उच्चैः शुभं हावा च क्षैत्रं दृष्टुं ॥ ५२ ॥ नास्ति नाद हर्षं रासायनं वा नास्ति मन्त्रि तीष्ठ हप टल्लिखि यत्नं ४ ॥

क्रायति काय २ डं उधुमदायाध हैरुट् ॥ ॥ वासाकमसयवजम
 धर्कप्रदाताहिमलितीपछाधये ॥ कायप्रता ॥ पथीनधति ॥ डं डं कायैयय
 ममथनअक २ काय २ सर्वकामयसाधनहैरुट् २ लाहा ॥ ॥ रुर्ग १००
 पयलिरदं दी दिगुर्गैकैकमसैनिरीणभीकदाहैकामाकदहाधलागम
 दमयालकलकप्रसलकैकैनेविदरलकुक्रयादि ॥ ॥ डं छिउसि

डं डं दिक्ताताहोगुमडातामातामकुधवधैयकसुखसैवखसीपयवकण
 लसैयठयक्रियायुतामधयवितामदननचवति ॥ डं आक २ मादय २ अमकी
 माचहीकलाहा ॥ ॥ डदयकीठरसचूर्णकलाकसाधुक्रानामिका ॥
 प्रकीलावटीकलाहिमकुंरकापानदयादधाकयाति ॥ डलाकयगुगुमउ
 लयकोहोयाउदकोमताकसालीअननचधनचवतिगीतापदपदधावति

[illegible]

॥ उदकनाहिसलुगंनचक्रः कालनाहिसिउहतिः ॥ उंसकउरुः चक्रः
 खादनानपरवतिः ॥ आदिरुषः उथवः लानवासुदवतनचवायुयक्रयातं
 गरुसाठाचक्रुविषेसादाः ॥ ॥ अथवृष्टिकककटादिविषंउथवेंलानंवा
 सुंदवंलनयं ॥ येनाहायतिः ॥ उंसामुः इतिगंउययाजिगंउं २ सादाः ॥ सफाः
 हिमनिगलासूकेचक्रुद्विष्टिषिषः ॥ ॥ एकैरुसुनसाययः ॥ उंस

रुनी रुनी माहनी सर्व इष्टं कामनी सादा ॥ ओ जी नरवति ॥ नमस्तुभ्यं
 का धाय दत्तं श्रुत्वा शिष्टं श्रुत्वा श्रुत्वा श्रुत्वा श्रुत्वा श्रुत्वा ॥ ॥ अथादि कथं
 नमो दा माह नामा मयति ॥ नमो जल गाय यत्तु ॥ सुविमलं सादा ॥ क र का य १०२
 रुनी रुनी माहनी सर्व इष्टं कामनी सादा ॥ ॥ अथादि कथं
 का धाय दत्तं श्रुत्वा शिष्टं श्रुत्वा श्रुत्वा श्रुत्वा श्रुत्वा ॥ ॥ अथादि कथं

कानादृ॥ डैवधुमहाप्रासादसर्वसायादधाकसर्वसायानिदधायतिविश्रहंरुद्र
 ॥ ॥ अननचधुमहाप्रासादसर्वसायादधाकसर्वसायानिदधायतिविश्रहंरुद्र
 यितानाप्रधुमहाप्रासादसर्वसायादधाकसर्वसायानिदधायतिविश्रहंरुद्र
 कालनाकलतिस्त्रि॥ ॥ प्रागोचपरायसेपराधुमहाप्रासादसर्वसायादधाकसर्वसायानिदधायतिविश्रहंरुद्र
 विचरुंटीदधायति॥ ॥ मरुतलकवर्धुमहाप्रासादसर्वसायादधाकसर्वसायानिदधायतिविश्रहंरुद्र

यस्य दृष्टान्तमस्तु ॥ यत्तन्मन्त्रं कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥ हलाहलस्यैः
 स्यात्तन्मन्त्रं कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥ ॥ मन्त्रमस्तु कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥
 गन्धर्वस्यैः कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥ ॥ मन्त्रमस्तु कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥
 गन्धर्वस्यैः कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥ ॥ मन्त्रमस्तु कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥
 गन्धर्वस्यैः कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥ ॥ मन्त्रमस्तु कर्तुं चक्रमुक्तं दात्ताय ॥

केसरीप्रियपूषामध्यायक्रियाद्यातमागुंदाहिप्रथाप्रवर्ति॥ काशिकेतनोद्योगमात्र
॥ ककुप्राहारशायीतयाध्विगवद्विरीमयप्रियदेसवतगुमिगंविगुंदप्रति॥
अवमवानमात्र॥ ॥ काकद्वयप्रियप्रथाप्रापुंगतलकालन्याति॥
निहामनेयसाविष्टयाप्रक्रियात्मकाकनकाद्यगं॥ उंकाककहनीकदनीद
वदहकाकनरक्राययस्वाहा॥ ॥ हठमकीप्रीतिरुक्तलामुष्टीरुचिक

[illegible][illegible]

लीवयि लोहलेनाहदकपजीकायात्रयश॥ जम लीमलहिष्ठलिका४
 सननासुषपातनेकाछुषेमदिप्रयादयागु४॥ ताम्बलनवाविप्रचनेरवः
 ति४॥ लहोकीप्रमर्कवाजेयसवर्धुछुउतनरुंयडकेयरति४॥ १०३
 व॥ धूमछाटकनासीमुक्यदाहायेनकयाति४॥ चन्दननयका लननछा
 लीमात्र४॥ ॥ कंठकोमलछिप्रसिधयगु॥ खरुंउमलेदस ताव

लीमरुपयनरुं॥ धातादयद्रुंयादिछिसेनालनसकछिवाहलाउ४
 या॥ धाअकिचिलि लापियवगु॥ धासाघाटेनरवति४॥ धाताकवाजेयवर्धु
 पाइकाइयेहपिधरमाभाक्याऊलनमत्रति४॥ ॥ डाघदीअर्वयि४
 लाडिदागलसुपयगु॥ तफरुलेवाटना नददति४॥ सतकाकीप्रयः
 गहकिछुछुपासाटहयतने४॥ धवतडाप्रतिमलेपवीडहलवावनर

बाह्यपुत्रा दो वैधय ताहुपतने वो जहये वा प्रयति ॥ ॥ बधुवसा डल
 कवसा लो यमापा इ कामा प्रकृति इ यमना राम नरवरा ॥ ॥ सपुत्र रुत न ठा
 हरी सुदिवस लक्ष्म्य मधिका सन (नामक) धीखा हला कामपादि ना ठा द्वाः
 या हमी नसा यय डका व ॥ ॥ रावता मालामनु व कार्या यसा यसा प्रकन ॥
 रावय डका ॥ ॥ ॥ गडक सिवन रावा सना सन के गटसि साय व ॥

१०/३

गेल के गहसा नावदिता डके गल पाल के गहसा सुद्धा सादि प्रकन वनीः
 बाहुयता दीय लनक लाय न ॥ ॥ यना प्रका वलिव कार्य ॥ ॥ यिदी गहली मरव
 क्रि ला ग दा ल के लावय ला द लम रावति ॥ ॥ ॥ गिला ह वपि रता ना न ॥ ॥
 मगु द ल हे सा द सफ ग या द हा मा सा ॥ ॥ सा द द यी व रु प्य य स रु न न मु याः
 मा सा प्रवि व लु रु मा सना ॥ ॥ ता सु मा २ गति ग य मा न य ता २ स व र्मा २ः

700

[illegible]

मया मा कर्म मत्वा शय भुक्ति तदधु लोके कटि भक्ति यथा ॥ वदुःख उविः
 नवा लो मुक्ति राय न कर्ण दरा लय रुया न प गति ॥ ॥ तने वलि फ वं गुण
 ठिका या ह द्वा न ले न म कृति ॥ ह मित ता ख य रा या ध्व गु ते ल वि म दि ती कृ ता १००
 न न ए लि य ते ॥ त डा गो ड ल ति ता गु रा न न ॥ ल व द्वा म ल की पं क यि ता ला
 ह रा न न ले प न गा मु मि द्वा य ते ॥ ॥ ग क ल्म ह उं म न श डी ला उ र्द द्वा

ना क लु कि छि रा न रु ध क वा ल य य वा दि के र्म ल्म न ल द्वा मा लु ग ति ॥ कृ षी
 या कृ ग य ट क का द ल गु म ले प रि णा का ला लु ति रा गु म ति ॥ ॥ य म स रा रु ल
 ट क गे ल मा वि रा वि रा न ल ल्म ल ति ॥ ॥ वृ ल क लु वि या ख डी च ध
 म हा या ष ष रा लु क लु ह ल प रा ल न क वि षा ति ॥ ॥ अ थ रा य वा न द
 ह दि षा षा डी या न न श म मा ना ना ति दे षा क ॥ ड दा न श क ल दं षा उ वा न ॥

सर्वज्ञायाः ॥ जमीन (४०) यथा नाय २५॥ यथा यद्वद्विहिरा ॥ ६०॥ स एव ॥
 स हं दनं ॥ जीवने सर्व लो ॥ ॥ यथा उवासी कृत्तिया ॥ लान एव कं न द ॥
 धुमके के ॥ यथा स धुल वा दनं ॥ यथा ते जात यथा उवासी ॥ दक्षिण एव वा दन वः ॥
 द्धि म धुल म य ॥ ॥ वायन एव वा दनं ॥ वायम धुल म य ॥ ॥ वाम दक्षिः
 धम म य ॥ ॥ र वं सा दं धुम धुलं ॥ दम व र ॥ दम न्द च ॥ वायु दी म धुल र व ॥

१०२

ललना वा म ना जी सा ॥ उर ना स य व स्थिता ॥ अ व धा मा स धा दं ॥ ६०॥ स हं दन ॥
 नन्दन (६०) व द ॥ ॥ ए वं ॥ द र वं ॥ स वि ॥ स्थिति नि ध्य ल व र ॥ ॥ विम
 ॥ ६०॥ नि ॥ हं व ॥ या ॥ या व ॥ जी वं य व र ॥ ॥ ए वि ॥ धा नू व र ॥ का र्क ॥ य ॥ य ॥ य ॥
 स धा य ॥ ॥ नि ॥ र्म स द व ॥ का र्क ॥ नि ॥ ध्य ल ॥ स र ॥ का म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 स स सा धा य ॥ ॥ स य ॥ र ॥ व ॥ र ॥ ॥ ए वि ॥ धा नू व र ॥ का र्क ॥ य ॥ दाय ॥ ॥ ॥ ॥

सैवम् ॥ सिद्धांतं तत्र (६) दत्तं वदन्नाथवचनं यथा ॥ वायुमर्कं च (७) यथा
 नालिष्यति तत्रैव ॥ सिद्धांतं यत्र सांख्यं बहुधा स भवति तत्र ॥ दिव्यं न तत्र
 मायकं पंचकं हि कदापि न ज्ञायते ॥ ॥ यद्युपासनाभिस्तु ॥ स्वामी नालिष्यति ॥ ११०
 तत्रैव ॥ हृदये न च हृदये ॥ गुप्तेषु च न संप्रपद्यते ॥ मयं न च मयं कदा नालिष्यति
 सख्यं न ज्ञायते ॥ हृदयात् न च तदेव सत्यं यद्युपासनावयवम् ॥ ॥ तत्रैव हि यथावत्

च सर्वज्ञानं तत्रैव ॥ सर्वज्ञानं तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते
 तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥
 तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥
 तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥
 तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥ तत्रैव ज्ञायते तत्रैव ज्ञायते ॥

जामातसर्वसुखाके॥ ॥ शिवायम (धातथा धात्वा सर्वसामथ्यवर्द्धने॥ य
 मयरेवगतिरु वायनासमसाकती नियदगुतयेवगतिविमर्श॥ ॥ १११
 कपोमिकवधय साकृष्टि साकृष्टानथा उच्चाटनसर्वमे तावनेवपुसि॥
 धाति॥ ॥ केरकादिपुया (तान उरुदृष्टि नियात्रयत॥ वासावला॥
 किनादृष्टि॥ केरकनवहा कयत्॥ दक्षिणकषभा रुया येवकेननिया॥

शिता ललटि सुपुया दृष्टिसविदीयचकनसा॥ नासिकाशुक्तिनादृष्टि॥ ॥
 रुकंसहिकरुकादिगयायसा सुहावषयपचक॥ ॥ यचद॥ स॥ यः
 दृक् सुमुका॥ सचलेतु (दो चिनितावादिपक्षमसंपर्कदृष्टि नियात्रयतः
 सर्वसामर्थ्यकमु मिथागतिरुताथत॥ चिरुसुयाधनादाया याधा
 वायाधयाधनात्॥ चिरुसापितवहा (ध अनाममतिचष्टि॥ ॥

प्रह्लापायैकया लोउ वज्रयमसमाधाम ॥ निपूतादिसमेतुञ्ज ॥ सिधाः
 तं लोभन ॥ वज्रसत्ता दया वदो ॥ महायासु सप्तति ॥ कियन ॥
 लाकि का देवा ॥ कार्तिता ॥ ही कया दय ॥ सुख ॥ सर्वत कुं ॥ मया ॥
 ला ॥ ११२ ॥ यमे वा या धनं कला ॥ जगता व दान तापमा ॥ ॥ ही ठमः
 या वायु का उल्ल ॥ रविष्मक्ति मद दय ॥ वर्तमाना पि वे व द्वा ॥ वद रूप ॥

समनिता ॥ १॥ तस्या या वा स दानि ले चित्त यद व ले पुरे ॥ अच ले हि या न ॥
 कि ॥ रास्य ॥ तस दनि स ॥ ले ॥ नदि तं न वि सा सिद्धि ॥ दू ड सा गु पि ल ख तं ॥ ॥
 ॥ ॥ लं ॥ एक लु वा या ख ॥ च धु म द्या ॥ धा तं कुं वा य या मा प ठ ला द वि ॥
 ति रा म ॥ ॥ अथ रा वा ना द ॥ पा द ता ल का वि धा ॥ नहि व धा ति या ॥
 धा म ॥ ॥ पा द ता ल का वि धा ॥ च द्रु वे धा ता स ॥ य धा ॥ पा द ता ल का वि धा

लदछाना लमासनशा ॥ धीगा दो काल विपर्यया सर्वगुडि डदछाना लर
 दश ॥ ॥ ह ४ का जस छी गा रुक का जसा पू दछाना द्दं धम हन ॥ अना
 मिकाम लरु पू यवा दछाने मा दछा दिवसन ॥ दहापमा रून धा बछ ॥
 त ४ सर्वा धी गा उ दछा हन ॥ सात मा गु स द ला द छाम दि मा सन ॥ ॥
 बा गु इ न धा मि या गुं धा ॥ बा गु स द्वा दि ने कन ॥ वा सा वरु म गु ल्य धम ॥

११४

सन ॥ मरि विपर्यया लरु हन ॥ ना सा गु द छाना लो य मा सन ॥ न गु लु ला पा
 उ न अ मि य द छाना कृ दि ने ॥ ॥ क र्क ध लु र्क र्क ध ॥ प च व रु धि पु ॥
 मि वि ला द छाना गु र्क ध ॥ उ व ह्वा ला गु दे व ने प च ला के च वि न य ॥ ॥
 वृ ल क लु वी या र्वा छी च धु म द्वा या ध धा लु म ल ल धा प ट ल गु या वि धा मि
 लम ॥ ॥ अर्थ गु वा ना द्वा सा र्पि र स सा या धा लु र्क र्क ता ल क धा

दृष्टा ॥ विष्णु कृष्ण यैवदा ॥ सहजा यसमाधिष्ठा देवी मेरा गुणवयः
कंका उरुनसेरुता विष्णु वजी लुयाणिनी ॥ ॥ तावय काउताः
याता ध्रुव सिद्धि सवाग्रतं ॥ अथ वा तावय कृष्ण वक्षी स्त्री ॥ काउतरुवा ॥ ११७
मडिगा उरुनसेरुता ॥ पाता वजी धा लुयाणी ॥ उरु ॥ मडिगा वजी उरुनी
वाक ॥ उरु लुकी अमिता उरु मडिगा नृवा उरु काउरुनसेरुता ॥ ॥ ११८

ताताना ध्यामवक्षु उरु गंका उरुनसेरुता ॥ अमा उरु मडिगा ध्याया ॥ सर्व
उरु धामानव ॥ सहय कसेरु लुयाणी उरुनसेरुता ॥ उरु ध्याया धरु ॥ ध्यामा
नालि ध्यायिनय ॥ ॥ उरु लुयाणी उरु लुयाणी ॥ कना उरु उरु ताव
यगु ॥ अनन सिद्धि याता मडिगा नृवा सेरुता ॥ अथ वा उरु लुयाणी साध ॥
यलु तादिसेरुता ॥ सह सं उरु लुयाणी उरु ताव ॥ ॥

[illegible]

वर्ष उग्राय लेपक लयगुशास्य सुखाथका ॥ १० ॥ पीतवाचक मंत्रया इयामे
वापयश्चिबर्दयकयपेविचि नयगुशा ॥ ॥ लोचनमन्त्रिका ॥ ११ ॥ उदु ॥
कविधायिनी, वासदत्ति धारया ह्यं वेश ॥ १२ ॥ उदु ॥ वाक्ययुगाथा नैशयं पातु
जा देवी ॥ १३ ॥ अमर्कमध्यां यो उदु ॥ वाक्ययुगाथा नैशयं पातु ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ उदु ॥ वाक्ययुगाथा नैशयं पातु ॥ १६ ॥

धात्रिदीक्षा ॥ अथाष्टासनाष्टसर्वा अर्द्धष्टासनाष्टसर्वा अर्द्धपर्याकसंस्काराः ॥
 यावावजी न्यस्यत्वं द्वापुंठाककृतासनाः ॥ ॥ अथ अथ फलं उधवापकाः ॥
 द्वेषवज्जुदक्षि (ध) कर्त्तुं नूनीधवातीला यमनकाविरुपाः ॥ यच्छि ममानः ॥ ११०
 वजागु पद्यवज्जधवा कयाशा मययपिचवमुगु वज्जदास्त्रा सुविन्यसनाः ॥
 धाममन्त्रमिति दत्तमममहगती लुः ॥ ॥ स्यात्स तमपुण्या ली लुपः

दाष्टसर्वा मेलुदासक मर्द्धनाः ॥ अथावाहिद्य उष्टका (ध) कर्त्तुं वाष्टपीः
 मसन्निताः ॥ अथ हविनमा पुंदाया विन्यसु समन्तिताः ॥ गेल्ला के अस्मि
 गलीदी सतर्त्तुपयमं छात्रः ॥ ॥ अथान्तासेपुवक्रासि बहुवाचदाता
 वनाः ॥ विष्णुपया दयदेवे कल यच्चुवाचदीः ॥ वासदेवे रवद (ध) उक्
 वद्धुत्तुनेमते ॥ पीगव कामदेवे ॥ ॥ धाममसादिलनामके ॥ ॥ वायव

कृष्णवर्णके ॐ स्वाहासुप्रसूके ॥ कर्हि पर्ययक वा लये ग ॥ सहिता ला न ॥
पाद ग ॥ हावता च छि म द वा सि ता वे प ह्मा व यी ॥ ॥ अ सो व धा ॥ ४
नया (नान ॥ इ च म त्या दि प क या ॥ ब ध य त्सर्व द व न ॥ यो नि स न ल ॥ ४
या व ध ॥ ग या य म ल ॥ ॥ डं व ध म हा वा ष धी व ध २ अ म क र्हे क ट ॥ ॥
या त या प रु या य के ॥ वा स व (छ वा प म या ॥ नी ले वे व ध वा ष ल ॥ उ के या ॥

॥ ११८

कृष्णयापवा ॥ सि धा ता क र्ही या ॥ हाव ता प वि नि धि ता ॥ ॥ न व (छ वा
व ला दा छ हा व य म न य न ॥ वा ज ता पि वि ना या ॥ द क वि र्हा स मा दि ता ॥ ३
वि व न्नु र नू ल ये सि क्त न वा क नू व क म न पि र्वा व स स्ति ता या ॥ ॥
हाव य द व ता क र्हि ॥ अ थ वा क व ले सो र्ही ॥ या वा दं द न न दि ता ॥ ता व दि ता
व य ठा न ॥ य व ले सू ट ता व ज ता ॥ वा ता य सू ट या वा स हा सू ट व सि धा सि

॥ ॐ ह्येक ल्प वा या ख्यो वा य धु म हा या ध धा र ल्प द व ती सा धा न य ट ल ॥
 प क्क वि षा ति स ॥ ॥ ॐ द स वा य र ग वा न् धा व ज स ल्प क्क व यो ती ती ठा धा ॥
 र ग वा ता रा वि र स ल्प न न्द नि ति ॥ ॥ ॐ ह्येक ल्प वा यी ता स धा व धु म हा या
 प स र क्क स मा र्क ॥ ॥ य ध र्मा ना द र य र वा द र ग र्मा र था वा र द व द
 र्क षा क्क यो ति यो ध ध वी वा दि स हा धु व धी ॥ ॥ ॐ ह्येक ल्प वा यी ता स धा व धु म हा या

१२०

प मा स क्क पू प क्क ॥ दि ति या अ ल्प स न र्क र्क अ य वा न् र्क र्क अ धा क ल्प
 म क्क र्क स मा वा य र्क म क्क वा सि षा वि र्क क क ट वा धि च ल्प स सि ॥
 ध क्क र्क स र्क यो दा र्क ल्प ॥ ॥ ति ति र्क र्क वा य र्क ध न ल्प र्क
 ॥ ॥ ॐ ह्येक ल्प वा यी ता स धा व धु म हा या

मृ नननिसुतं जय्याग्मग्मनरुग्मनायुक्तुनिकौस्तुखानस्यदानं ययनूडचोत
यनिसुयय॥ ड्योतमनकु॥ ॐ मज्जं स्रं मृ मृ मृ नमकुः॥ ॐ नः ॐ हृ सि
स्र स्र य सुद। मृ रव कलापुं स्रन स्र यय मकु यथे हा नयनरु सि न सु न॥ ॐ
रः ॐ हृ हृ ॥ धा हृ क स्र स्र नी॥ ॐ म मा स्र न हा न यथे स्र स्र स्र न॥ ॐ

हृ हृ हृ थ श्री वा क थ ॐ थ
वि दी थ थ ॐ ॐ





